وَ اِذَا سَمِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ تَرٰۤى اَعْیُنَهُمْ تَفِیْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ یَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِیْنَ ۝۸۳ وَ مَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ مَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ ۙ وَ نَطْمَعُ اَنْ یُّدْخِلَنَا رَبُّنَا
مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِیْنَ ۝۸۴ فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِیْنَ فِیْهَا ؕ وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ
الْمُحْسِنِیْنَ ۝۸۵ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَاۤ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِیْمِ ۠ ۝۸۶ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَیِّبٰتِ
مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ الْمُعْتَدِیْنَ ۝۸۷ وَ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَیِّبًا ۪ وَّ اتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِیْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝۸۸

आयत न० 83 से 88

**और** (कुछ उन ईसाइयों में जो कि बाद में मुसलमान हो गये थे ऐसे हैं कि) **जब वो इस** (कलाम) **को सुनते हैं जो कि रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की तरफ़ भेजा गया है** (यानी कुरआन) **तो आप उन की आंखें आंसुओं से बहती हुई देखते हैं इस वजह से कि उन्होंने सच्चे दीन** (यानी इस्लाम) **को पहचान लिया,** (और) **यह कहते हैं कि हमारे रब हम मुसलमान हो गये हैं तो हम को भी उन लोगों के साथ लिख लीजिए** (यानी उन में हमारी भी गिनती कर लीजिए) **जो** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुरआन के सच्चा होने की) **गवाही देते हैं(83) और हमारे पास कौन सी मजबूरी है कि हम** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअ़त के सिखाए तरीक़े पर) **अल्लाह तआ़ला पर और जो सच्चा दीन हम को** (अब) **पहुंचा है उस पर ईमान न लाएं और** (फिर) **इस बात की उम्मीद** (भी) **रक्खें कि हमारा रब हम को नेक** (मक़बूल) **लोगों के साथ शामिल कर लेगा** (बल्कि इस के लिए मुसलमान होना ज़रूरी है)**(84) सो इन** (लोगों) **को अल्लाह तआ़ला उन के** (इस) **बयान** (जो कि यक़ीन के साथ हो) **के बदले में ऐसे बाग़** (जन्नत के) **देंगे जिन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी** (और) **ये उन में सदा-सदा को रहेंगे, और नेक लोगों का ये ही बदला है(85) और** (इस के उलट) **जो लोग काफ़िर रहे और हमारी आयतों** (व हुक्मों) **को झूटा कहते रहे वो लोग दोज़ख़** (में रहने) **वाले हैं(86) ऐ ईमान वालो अल्लाह तआ़ला ने जो चीज़ें तुम्हारे वास्ते हलाल की हैं** (चाहे वो खाने पीने और पहनने की क़िस्म से हों या बीवियों से हों) **उन में पाकीज़ा** (और मन भाती) **चीज़ों को** (क़सम खाकर अपने ऊपर) **हराम मत करो और** (शरीअ़त की) **हदों से** (जो कि हराम हलाल के बारे में तय हैं) **आगे मत निकलो, बेशक अल्लाह तआ़ला** (शरीअ़त की) **हद से निकलने वालों को**

**पसन्द नहीं करते**(87) **और अल्लाह तआ़ला ने जो चीज़ें तुम को दी हैं उन में से हलाल पसन्दीदा चीज़ों को खाओ** (बरतो)**, और अल्लाह तआ़ला से डरो जिस पर तुम ईमान रखते हो** (यानी हलाल को हराम समझने में अल्लाह तआ़ला की नाराज़ी है सो डरो और इससे बचो) (88)।

**नोटः**- यहां मालूम हुआ कि हलाल पाक चीज़ों को सवाब समझ कर छोड़ देना तक़्वा नहीं बल्कि तक़्वा इसमें है कि उस को अल्लाह तआ़ला की नेमत समझ कर बरते और शुक्र अदा करे। हां किसी जिस्मानी या रूहानी बीमारी की वजह से इलाज के तौर पर किसी चीज़ को छोड़ दे तो कोई हरज नहीं।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗٓ اِطْعَامُ
عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ وَاحْفَظُوْٓا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿٨٩﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ
فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿٩٠﴾ اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَ
يَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ ﴿٩١﴾ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ
تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿٩٢﴾ لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا
طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٩٣﴾ ع

आयत न० 89 से 93

**अल्लाह तआ़ला तुम से** (दुनिया में) **पकड़ नहीं करते** (यानी कफ़्फ़ाराः वाजिब नहीं करते) **तुम्हारी क़समों में बेहूदा क़सम** (तोड़ने) **पर लेकिन** (ऐसी) **पकड़ उस पर करते हैं कि तुम क़समों को** (आगे की बात पर) **पक्की कर दो** (और फिर उस को तोड़ दो)**, तो उस** (क़सम के तोड़ने) **का कफ़्फ़ाराः** (यानी जुर्माना यह है कि) **दस ग़रीबों को खाना देना बीच रास का जो अपने घर वालों को** (आम तौर पर) **खाने को दिया करते हो या उन** (दस ग़रीबों) **को कपड़ा देना** (बीच रास का) **या एक ग़ुलाम या बान्दी आज़ाद करना** (यानी तीनों में से जिस को चाहे करे)**, और जिस को** (इन तीनों में से एक की भी) **हिम्मत न हो तो** (उस का कफ़्फ़ारा) **तीन दिन**

**के** (लगातार) **रोज़े हैं, यह** (जो बयान हुआ) **कफ़्फ़ारा है तुम्हारी** (ऐसी) **क़समों का जब तुम क़सम खालो** (और फिर उस को तोड़ दो), **और** (चूंकि यह कफ़्फ़ाराः वाजिब है इसलिए) **अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया** (करो यानी क़सम खाने में जल्दी न करो और अगर क़सम खालो तो बिना मजबूरी न तोड़ों और अगर तोड़ दो तो कफ़्फ़ारा अदा) **करो, इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हारे वास्ते अपने** (दूसरे) **हुक्मों को** (भी) **बयान करते हैं ताकि तुम** (इस नेमत का) **शुक्र करो(89) ऐ ईमान वालो शराब और जुवा और बुत और पांसा** (यानी लाटरी का जुवा) **ये सब गन्दी बातें शैतानी काम है सो इन से बिल्कुल अलग रहो ताकि तुम को** (इन के नुक़सान के बचने की वजह से) **कामयाबी हो(90)** (और वो नुक़सान दुनिया के भी हैं और दीन के भी जिन का बयान यह है कि) **शैतान तो यह चाहता है कि शराब और जुवे के वास्ते से तुम्हारे आपस** (के बरताव) **में दुशमनी और** (दिलों में) **बैर डाल दें** (चूंकि शराब में तो अक्ल नहीं रहती जिससे दंगा फ़साद हो जाता है और जुवे में जो हार जाता है उस को जीतने वाले पर गुस्सा होता है) **और** (शैतान यह चाहता है कि इसी शराब और जुवे के वास्ते से) **अल्लाह की याद से और नमाज़** (जो कि अल्लाह की याद का सब से ऊंचा तरीक़ा है उस) **से तुम को रोक दे, तो** (इसके नुक़सान जान कर) **अब भी तुम** (इससे) **बाज़ आओगे(91) और हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और** (इन बातों से) **बचते रहो फिर अगर तुम मुंह फेरोगे** (यानी रसूल की बात न मानोगे) **तो जान लो** (कि इसमें तुम्हारा ही नुक़सान है क्योंकि) **हमारे रसूल के ज़िम्मे तो सिर्फ़** (अल्लाह के हुक्मों को) **साफ़-साफ़ पहुंचा देना है(92) ऐसे लोगों पर जो कि ईमान रखते हों और नेक काम करते हों उस चीज़ में कोई गुनाह नहीं जिस को वो खाते पीते हों** (और उस वक़्त वो हलाल हो चाहे बाद में हराम हो जाए) **जब कि वो लोग** (अल्लाह के डर से उस वक़्त की नाजाइज़ चीज़ों से) **बचते रहें और** (सबूत अल्लाह से डरने का यह है कि वो लोग) **ईमान रखते हों और नेक काम करते हों** (और इसी हालत पर वो उम्र भर रहें) **फिर** (आगे जिन चीज़ों से रोका जाए उन से) **बचा करें और ईमान रखते हों और ख़ूब नेक काम करते हों, और अल्लाह तआ़ला ऐसे नेक लोगों से मुहब्बत रखते हैं(93)।**

**नोटः-** जब शराब और जुवे के हराम होने का हुक्म आया तो कुछ लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि जो मुसलमान इस हुक्म के आने से पहले मर गये उन का क्या हाल होगा इस पर यह आयत उतरी।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَیْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗۤ اَيْدِيْكُمْ وَ رِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ
بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۹۴﴾ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَ اَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ وَ
مَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ
كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ اَمْرِهٖ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ؕ وَ مَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ؕ وَ اللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ﴿۹۵﴾ اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَ طَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَ لِلسَّيَّارَةِ ۚ وَ
حُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ؕ وَ اتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۹۶﴾

आयत न० 94 से 96

**नोटः**- इन आयतों में अहराम के ज़माने में और हरम में शिकार के हुक्मों का बयान हैः-

**ऐ ईमान वालो अल्लाह तआ़ला शिकार** (के जानवरों) **से तुम्हें ज़रूर आज़माएगा जिन** (के तुम से दूर न भागने की वजह से उन) **तक तुम्हारे हाथ और हथियार पहुंच सकेंगे** (यानी उन जानवरों को तुम्हारे आस पास फिराते रहेंगे) **ताकि अल्लाह तआ़ला** (खुले तौर पर भी) **जान लें कि कौन आदमी उससे** (यानी उस के अ़ज़ाब से) **बिना देखे डरता** (है और हराम बातों से बचता) **है, तो जो आदमी इसके बाद भी** (शरीअ़त की) **हद से निकलेगा** (यानी ऐसा शिकार करेगा) **उस के वास्ते दर्दनाक सज़ा** (तैयार) **है(94) ऐ ईमान वालो जब कि तुम अहराम की हालत में हो** (तो किसी) **शिकार को क़त्ल मत करो** (इसी तरह जब कि वो शिकार हरम में हो चाहे शिकारी अहराम में न हो उस का भी ये ही हुक्म है), **और जो आदमी तुम में उस को जान बूझ कर क़त्ल करेगा तो उस पर उस का बदला देना वाजिब होगा जो कि** (क़ीमत में) **बराबर होगा उस जानवर के जिस को उस ने क़त्ल किया है जिस** (के अन्दाज़े) **का फ़ैसला तुम में से दो ऐतबार के क़ाबिल तजरबाकार आदमी करेंगे, चाहे** (उस क़ीमत का कोई ऐसा जानवर ख़रीद लें कि) **वो बदले का जानवर ख़ास पालतू जानवरों में से हो** (यानी ऊंट गाय भैंस भेड़ बकरी नर हो या मादा) **शर्त यह है कि क़ुर्बानी के लिए काबा** (के पास) **तक** (यानी हरम के अन्दर) **पहुंचाया जाए और चाहे खाना** (उस की क़ीमत के बराबर या ग़ल्ला) **बदले में ग़रीबों को दे दिया जाए** (यानी एक ग़रीब को एक फ़ितरे के बराबर दिया जाए) **और चाहे उस** (ग़ल्ले) **के बराबर रोज़े रख लिये जाएं** (यानी हर फ़ितरे की क़ीमत के बदले एक रोज़ा, और यह सज़ा इसलिए रक्खी है) **ताकि**

**अपने किये का बदला चखें, पहले जो कुछ हो चुका अल्लाह ने उसे मुआफ़ कर दिया, और जो आदमी दोबारा ऐसा करेगा तो अल्लाह तआ़ला उससे बदला लेंगे** (हां अगर तौबा कर ले तो सज़ा टल सकती है), **और अल्लाह तआ़ला ज़बरदस्त** (ताक़त वाले) **हैं** (कि) **बदला ले सकते हैं (95) तुम्हारे लिए** (अहराम की हालत में) **समन्दर** (यानी पानी) **का शिकार पकड़ना और उस का खाना** (सब) **हलाल किया गया है तुम्हारे नफ़े के वास्ते** (और तुम्हारे) **मुसाफ़िरों के** (नफ़े के) **वास्ते** (कि सफ़र में उसी को अपनी ख़ुराक बनाएं), **और जंगल का शिकार** (चाहे कुछ सूरतों में खाना हलाल हो मगर) **पकड़ना** (या उसमें मददगार होना) **तुम्हारे लिए हराम किया गया है जब तक तुम अहराम की हालत में रहो, और अल्लाह तआ़ला** (की नाराज़ी) **से डरो जिस के पास तुम सब को जमा किया जाएगा(96)।**

**नोटः**- जो हलाल शिकार ग़ैर अहराम और ग़ैर हरम में किया जाए उस का खाना अहराम वाले को जाइज़ है जबकि वो शिकार करने में किसी तरह का मददगार न हो।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَ الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَ الْهَدْيَ وَ الْقَلَآئِدَ ؕ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ
اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِي الْاَرْضِ وَ اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿۹۷﴾ اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَ اَنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۹۸﴾ مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَ اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَ مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿۹۹﴾ قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَ
الطَّيِّبُ وَ لَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِي الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۱۰۰﴾

आयत न० 97 से 100

**अल्लाह तआ़ला ने काबा को जो कि अदब का घर है लोगों की सलामती का सामान बना दिया है और** (इसी तरह) **इज़्ज़त वाले महीने** (यानी ज़िलहिज्जा के महीने) **को भी और** (इसी तरह) **हरम में क़ुरबानी होने वाले जानवर को भी और** (इसी तरह) **उन जानवरों को भी जिन के गले में** (इस निशानी के लिए) **पट्टे पड़े हों** (कि ये अल्लाह के नाम की क़ुरबानी है हरम में ज़बह होंगे), **यह इस** (दीनी भलाई के) **लिए** (भी) **है ताकि** (तुम्हारा ऐतक़ाद सही और पक्का हो और तुम) **इस बात का यक़ीन** (पूरी तरह) **कर लो कि बेशक अल्लाह तआ़ला आसमानों और ज़मीन के अन्दर की चीज़ों की** (पूरी) **जानकारी रखते हैं और बेशक अल्लाह तआ़ला सब चीज़ों को अच्छी तरह जानते हैं(97) तुम यक़ीन से जानो कि अल्लाह तआ़ला सज़ा भी सख़्त देने वाले**

**हैं और अल्लाह बड़े मुआफ़ करने वाले और रहमत वाले हैं** (तो उन का कहना मानो और जो ग़लती हो जाए उससे तौबा कर लो)(98) **रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **के ज़िम्मे तो सिर्फ़** (हुक्मों का) **पहुंचा देना है** (तो वो अच्छी तरह पहुंचा चुके अब तुम्हारे पास कोई बहाना नहीं रहा), **और अल्लाह तआ़ला सब जानते हैं जो कुछ तुम खुले आम करते हो और जो कुछ** (दिल में) **छुपा रखते हो**(99) **आप** (ऐ पैग़म्बर लोगों से यह भी) **कह दीजिए कि नापाक और पाक** (यानी गुनाह करने वाला और ताबेदारी करने वाला) **बराबर नहीं** (भले ही) **तुम को नापाक का ज़्यादा होना अचम्भे में डालता हो** (कि नापसन्द होने के बावजूद ये ज़्यादा क्यों हैं इसमें भी कुछ हिकमतें छुपी हैं) **तो** (इस को मत देखो बल्कि) **अल्लाह तआ़ला** (की नाराज़ी) **से डरते रहो ऐ समझदारो ताकि तुम** (पूरी तरह से) **कामयाब हो जाओ** (और वो कामयाबी अल्लाह का राज़ी होना और जन्नत में जाना है)(100)।

**नोटः**- जब तक लोग काबा की तरफ़ मुंह करके नमाज़ अदा करते रहेंगे और जिन पर हज फ़र्ज़ है वो हज अदा करते रहेंगे उस वक़्त तक दुनिया में सलामती रहेगी और अगर एक साल भी ऐसा हो जाए कि कोई हज न करे या कोई काबा की तरफ़ मुंह करके नमाज़ अदा न करे तो पूरी दुनिया पर आम अज़ाब आ जाएगा।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَ اِنْ تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ
لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿۱۰۱﴾ قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ﴿۱۰۲﴾

आयत न० 101 से 102

**ऐ ईमान वालो ऐसी** (बेकार) **बातें मत पूछो** (जिन में यह शक हो कि) **अगर तुम पर खोल दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें** (यानी यह शक हो कि अगर तुम्हारी मर्ज़ी का जवाब नहीं आया तो तुम्हें बुरा लगेगा) **अगर तुम कुरआन उतरने** (और वही आने) **के वक़्त में इन बातों को पूछो तो तुम पर खोल दी जाएंगी,** (चलो) **पिछले सवालों को** (जो इस वक़्त तक कर चुके हो वो तो) **अल्लाह तआ़ला ने मुआफ़ कर दिया** (मगर आगे ऐसा मत करना), **और अल्लाह तआ़ला बड़े मुआफ़ करने वाले हैं** (इसलिए पिछले सवालों को मुआफ़ कर दिया और) **बड़ी सहार वाले हैं** (इसलिए अगर आगे ग़लती पर दुनिया में सज़ा न दें तो धोके में मत पड़ जाना कि आगे भी कोई अज़ाब व सज़ा न होगी)(101) **ऐसी बातें तुम से पहले** (ज़माने में) **और** (उम्मतों के) **लोगों ने भी** (अपने पैग़म्बरों से)

**पूछी थी फिर** (उन को जवाब मिला तो) **उन बातों का हक़ अदा न कर सके** (यानी उन जवाबों में जो हुक्म थे उन को पूरा नहीं किया और जो क़िस्से थे उन का दिल पर असर नहीं लिया इसलिए अच्छा ये ही है कि ऐसे सवालों को छोड़ दो)(102)।

**नोटः**- किसी सहाबी ने सवाल किया था कि क्या हर साल हमारे ऊपर हज फ़र्ज़ है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नाराज़गी के साथ ताकीद की कि अगर मैं हां कह देता तो ऐसा ही हो जाता फिर उस को तुम लोग अदा न कर पाते इसलिए मना किया गया कि ऐसे ग़ैर ज़रूरी सवाल न पूछा करें पिछली उम्मतें ऐसी बातों पर हलाक हुई हैं ।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِیْرَةٍ وَّلَا سَآىِٕبَةٍ وَّلَا وَصِیْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا یَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
وَاَكْثَرُهُمْ لَا یَعْقِلُوْنَ ۝١٠٣ وَاِذَا قِیْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا
عَلَیْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا یَعْلَمُوْنَ شَیْـًٔا وَّلَا یَهْتَدُوْنَ ۝١٠٤ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا عَلَیْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ لَا
یَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَیْتُمْ ؕ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِیْعًا فَیُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٠٥

आयत न० 103 से 105

**अल्लाह तआ़ला ने न बहीरा को जाइज़ किया है और न साइबा को और वसीला को और न हामी को लेकिन जो लोग काफ़िर हैं वो** (इन रस्मों के बारे में) **अल्लाह तआ़ला पर झूट लगाते** (हैं कि अल्लाह तआ़ला इन कामों से ख़ुश) **हैं, और ज़्यादा तर काफ़िर** (दीन की) **समझ नहीं रखते** (और इससे काम नहीं लेते बल्कि सिर्फ़ अपने बड़ों की देखा देखी ऐसी जहालत करते हैं)(103) **जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह तआ़ला ने जो हुक्म भेजे हैं उन की तरफ़ और रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **की तरफ़ आओ** (जो बात इससे सही साबित हो सही समझो और जो ग़लत साबित हो ग़लत समझो) **तो कहते हैं कि हम को** (इन हुक्मों और रसूल की ज़रूरत नहीं हम को) **वो ही** (तरीक़ा) **काफ़ी है जिस पर हम ने अपने बड़ों को देखा है,** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि) **क्या** (वो तरीक़ा उन के लिए हर हाल में काफ़ी है) **चाहे उन के बड़े** (दीन की) **न कुछ समझ रखते हों और न** (किसी आसमानी किताब की) **हिदायत रखते हों**(104) **ऐ ईमान वालो अपनी** (यानी अपने सुधार की) **फ़िक्र करो** (असल काम तुम्हारे ज़िम्मे यह है, क्योंकि) **जब तुम** (दीन की) **राह पर चल रहे हो** (और दीन की ज़रूरी बातों को अदा कर रहे हो इस तरह

कि अपना भी सुधार कर रहे हो और दूसरों के सुधार की भी कोशिश कर रहे हो) **तो जो आदमी** (तुम्हारी कोशिश के बावजूद भी) **गुमराह रहे तो उस** (के गुमराह रहने) **से तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं,** (इसलिए इस बारे में न ग़म करो न गुस्सा क्योंकि) **अल्लाह ही के पास तुम सब को जाना है फिर वो तुम सब को बता देंगे जो कुछ तुम किया करते थे** (और बता कर नेकियों पर सवाब और बुराइयों पर अज़ाब का हुक्म देंगे)(**105**)।

**नोटः-** बहीरा, साइबा, वसीला और हामी जहालत के ज़मने की रस्में व निशानियां हैं कि इनमें कुछ जानवरों के दूध को और कुछ जानवरों को बुतों के नामज़द कर देते थे और इस काम को ख़ुदा की ख़ुशी का सामान समझते थे ।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ اٰخَرٰنِ
مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِى الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ
بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِىْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ ۙ اللّٰهِ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاِنْ
عُثِرَ عَلٰۤى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّاۤ اِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ
لَشَهَادَتُنَاۤ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَاۤ ۖ اِنَّاۤ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى
وَجْهِهَاۤ اَوْ يَخَافُوْۤا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۰۸﴾

आयत न० 106 से 108

**ऐ ईमान वालो जब तुम में से किसी को मौत** (की हालत नज़र) **आने लगे यानी वसीयत करने का वक़्त हो तो आपस में के दो नेक लोगों को गवाह बना लेना अच्छा है** (भले ही बिल्कुल गवाह न बनाना भी जाइज़ है) **या अगर** (मुसलमान न मिले जैसे) **तुम कहीं सफ़र में गये हों और वहीं तुम्हें मौत की मुसीबत आजाए तो दूसरों** (यानी ग़ैर मुस्लिमों) **में से दो गवाह हों** (यह भी जाइज़ है), **अगर** (किसी वजह से गवाहों पर) **तुम को** (ऐ वारिसो) **शक हो तो उन दोनों** (गवाहों) **को नमाज़ के बाद रोक लो फिर दोनों** (इस तरह) **अल्लाह की क़सम खाकर कहें कि हम इस क़सम के बदले कोई** (दुनिया का) **नफ़ा नहीं लेना चाहते** (कि दुनिया के नफ़े के लिए क़सम में सच बोलना छोड़ दें) **चाहे** (इस क़िस्से में हमारा) **कोई रिश्तेदार ही क्यों न हो और अल्लाह ने हम पर जिस गवाही की ज़िम्मेदारी डाली है उस को हम नहीं छुपाएंगे** (वर्ना) **हम**

(ऐसा करें तो) **इस हालत में बहुत गुनाहगार होंगे**(106) **फिर** (इस के बाद) **अगर** (किसी तरह से) **इस का पता चले कि उन्होंने** (झूट बोलकर) **अपने ऊपर गुनाह का बोझ उठा लिया है** (तो) **इन** (वारिस) **लोगों में से दो आदमी उन की जगह** (गवाही के लिए) **खड़े हो जाएं जिन के ख़िलाफ़ उन पहले दो आदमियों ने गुनाह अपने सर लिया था और वो अल्लाह की क़सम खाएं कि हमारी गवाही उन पहले दो आदमियों की गवाही के मुक़ाबिले ज़्यादा सच्ची है और हम ने** (इस गवाही में) **कोई ज़्यादती नहीं की है** (वर्ना) **हम** (अगर ऐसा करेंगे तो) **इस हालत में ज़ालिमों में गिने जाएंगे**(107) **इस तरीक़े में इस बात की ज़्यादा उम्मीद है कि लोग** (शुरू ही में) **ठीक-ठीक गवाही दें या इस बात से डरें कि** (झूटी गवाही की सूरत में) **उन की क़समों के बाद लौटा कर दूसरी क़समें ली जाएंगी** (फिर हम को शर्मिन्दा होना पड़ेगा), **और अल्लाह तआ़ला से डरो** (और झूट मत बोलो) **और** (उन के हुक्मों को) **सुनो** (यानी मानो), **और** (अगर कहना न मानोगे तो जान लो कि) **अल्लाह तआ़ला कहना न मानने वाले लोगों को** (क़ियामत के दिन ताबेदार लोगों के दर्जे की तरफ़) **रास्ता नहीं दिखाएंगे** (बल्कि बख़्शिश के बाद भी वो दर्जे में ताबेदारों से कम रहेंगे)(108)

**नोटः-** बुदैल नामी एक आदमी ने सफ़र में मौत के वक़्त अपनी अमानत वारिसों को पहुंचाने के लिए दो लोगों के सुपुर्द की थी जिन्होंने उसमें से कुछ चोरी कर ली थी जो बाद में खुल गई और वारिसों को वो माल दिलाया गया इस क़िस्से पर ये आयतें उतरीं।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ﴿۱۰۹﴾ اِذْ قَالَ اللّٰهُ
يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِیْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۟ تُكَلِّمُ النَّاسَ فِی
الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ
الطَّيْرِ بِاِذْنِیْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًۢا بِاِذْنِیْ وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِیْ ۚ وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى
بِاِذْنِیْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ بَنِیْۤ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ
مُّبِيْنٌ ﴿۱۱۰﴾ وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا بِیْ وَبِرَسُوْلِیْ ۚ قَالُوْۤا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ﴿۱۱۱﴾ اِذْ قَالَ
الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ؕ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۱۲﴾ قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ

الشّٰهِدِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَ
اٰخِرِنَا وَ اٰيَةً مِّنْكَ ۚ وَ ارْزُقْنَا وَ اَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ
فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ ع

आयत न० 109 से 115

(वो दिन याद करो) **जिस दिन अल्लाह तआ़ला सभी पैग़म्बरों को** (उन की उम्मतों के साथ) **जमा करेंगे फिर कहेंगे कि तुम को** (इन उम्मतों की तरफ़ से) **क्या जवाब मिला था, वो कहेंगे कि** (खुला जवाब तो हम को पता है और उस को बयान भी कर देंगे लेकिन उन के दिल में जो कुछ हो उस की) **हम को कुछ ख़बर नहीं** (उस को आप ही जानते हैं, क्योंकि) **आप बेशक छुपी बातों के पूरे जानने वाले हैं**(109) (यह क़िस्सा उस दिन होगा) **जब कि अल्लाह तआ़ला कहेंगे कि ऐ ईसा बिन मरयम मेरा इनआम याद करो जो तुम पर और तुम्हारी मां पर** (अलग-अलग वक़्तों में अलग-अलग सूरतों से) **हुआ है,** (जैसे) **जब कि जिब्रील** (अ़लैहिस्सलाम के वास्ते) **से मैंने तुम्हारी मदद की,** (और) **तुम लोगों से** (दोनो हालतों में एक सी) **बात करते थे** (मां की) **गोद में भी और बड़ी उम्र में भी** (दोनों बातों में कुछ फ़र्क़ न था), **और जब कि मैंने तुम को** (आसमानी) **किताबें और समझ की बातें** (ख़ास कर) **तौरेत व इन्जील सिखाई, और जब कि तुम गारे से एक परिन्दे जैसी शकल बनाते थे मेरे हुक्म से फिर तुम उस के अन्दर फूंक मार देते थे जिससे वो** (सचमुच का जानदार) **परिन्दाः बन जाता था मेरे हुक्म से और तुम अच्छा कर देते थे पैदाइशी अन्धे और कोढ़ी को मेरे हुक्म से, और जब कि तुम मुर्दों को** (क़ब्रों से) **निकाल** (और ज़िन्दा करके) **खड़ा कर लेते थे मेरे हुक्म से, और जब कि मैंने बनी इस्राईल** (में से जो आप के दुशमन थे उन) **को तुम से** (यानी तुम्हारे क़त्ल से) **बाज़ रक्खा जब** (उन्होंने तुम को नुक़सान पहुंचाना चाहा जब कि) **तुम उन के पास** (अपनी पैग़म्बरी की) **निशानियां** (मोजिज़े) **लेकर आए थे फिर उन में जो काफ़िर थे उन्होंने कहा था कि ये** (मोजिज़े) **सिवाए खुले जादू के और कुछ भी नहीं**(110) **और जब कि मैंने हवारियों को** (इन्जील में तुम्हारी ज़बानी) **हुक्म दिया कि तुम मुझ पर और मेरे रसूल** (ईसा अ़लैहिस्सलाम) **पर ईमान लाओ, उन्होंने** (जवाब में तुम से) **कहा कि हम** (अल्लाह पर और रसूल यानी आप पर) **ईमान लाए और आप गवाह रहिए कि हम** (अल्लाह के और आप के) **पूरे ताबेदार हैं**(111) (और वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब कि हवारियों ने** (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से) **कहा कि या ईसा बिन मरयम** (अ़लैहिस्सलाम)**क्या आप**

**के रब ऐसा कर सकते हैं** (यानी ऐसा करना कुछ ग़लत तो नहीं) **कि हम पर आसमान से कुछ खाना** (पका पकाया) **उतार दें, आप ने कहा कि अल्लाह से डरो अगर तुम ईमान वाले हो** (मतलब यह कि तुम मोमिन हो इसलिए मोजिज़ों की मांग न करो कि बेज़रूरत होने की वजह से अदब के ख़िलाफ़ है)(112) **वो बोले कि हम** (एक तो) **यह चाहते हैं कि** (बरकत के लिए) **उसमें से खाएं और** (दूसरे यह कि) **हमारे दिलों को** (ईमान पर) **पूरी तसल्ली हो जाए और हमारा यह यक़ीन और बढ़ जाए कि आप ने** (पैग़म्बरी के दावे में) **हम से सच बोला है** (क्योंकि जितने सबूत बढ़ते जाते हैं दावे का यक़ीन बढ़ता जाता है) **और** (तीसरे यह कि) **हम** (उन लोगों के सामने जिन्होंने यह मोजिज़ा नहीं देखा) **गवाही देने वालों में से हो जाएं** (कि हम ने ऐसा मोजिज़ा देखा है ताकि हमारा बयान उन की हिदायत का सामान बन जाए)(113) **ईसा बिन मरयम** (अ़लैहिस्सलाम) **ने** (जब देखा कि इस बारे में इन की नीयत सही है तो) **दुआ़ की या अल्लाह हमारे रब हम पर आसमान से खाना उतार दीजिए कि वो** (खाना) **हमारे लिए** (यानी जो मौजूद हैं उन के लिए) **और हमारे बाद** (में आने) **वालों के लिए** (सब के लिए) **एक ख़ुशी की बात हो जाए और** (मेरी पैग़म्बरी पर) **आप की तरफ़ से एक निशानी हो जाए, और आप हम को** (वो नेमत) **दे दीजिए और आप सब देने वालों से अच्छे देने वाले हैं** (क्योंकि सब का देना अपने नफ़े के लिए और आप का देना लोगों के नफ़े के लिए है)(114) **अल्लाह तआ़ला ने** (जवाब में) **कहा कि** (आप लोगों से कह दीजिए कि) **मैं वो खाना** (माइदा आसमान से) **तुम लोगों पर उतार दूंगा** (लेकिन) **फिर जो आदमी तुम में से इस के बाद कुफ़्र करेगा तो मैं उस को ऐसी सज़ा दूंगा कि वो सज़ा** (इस वक़्त के) **दुनिया वालों में से किसी को न दूंगा**(115)।

**नोटः-** एक हदीस में है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की दुआ़ पर वो खाना आसमान से उतरा मगर कुछ लोगों ने फिर भी नाशुक्री यानी कुफ़्र किया बस सज़ा में बन्दर और सुअर की सूरत में बदल दिए गये। (तिरमिज़ी)

وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالَ سُبْحٰنَكَ
مَا يَكُوْنُ لِيْۤ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۗ بِحَقٍّ ؕ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ؕ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَاۤ اَعْلَمُ مَا فِيْ
نَفْسِكَ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝١١٦ مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَاۤ اَمَرْتَنِيْ بِهٖۤ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ
عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ؕ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝١١٧ اِنْ

تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَ اِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١١٨﴾ قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ
الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ؕ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا
عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿١١٩﴾ لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ مَا فِيْهِنَّ ؕ وَ هُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٢٠﴾

आयत न० 116 से 120

**और** (उस वक़्त का भी ज़िक्र सुनो) **जब कि अल्लाह तआ़ला** (क़ियामत में हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम से ईसाई काफ़िरों को सुनाने के लिए) **कहेंगे कि ऐ ईसा बिन मरयम क्या तुम ने उन लोगों से कह दिया था कि मुझ को** (यानी ईसा अलैहिस्सलाम को) **और मेरी मां** (यानी हज़रत मरयम अ़लैहिस्सलाम) **को भी अल्लाह के सिवा माबूद बनाओ, तो ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **कहेंगे कि** (तौबा-तौबा) **मैं तो** (ख़ुद अपने अक़ीदे में) **आप को** (शिर्क से) **पाक समझता हूं** (जैसा कि आप सच में भी पाक हैं) **मेरी मजाल नहीं थी कि मैं ऐसी बात कहता जिस के कहने का मुझ को कोई हक़ नहीं, अगर मैंने** (सच में) **कहा होगा तो आप को इस का** (ज़रूर) **पता होगा,** (क्योंकि) **आप तो मेरे दिल के अन्दर की बात भी जानते हैं और मैं आप के इल्म में जो कुछ है उस को** (बिना आप के बताए हुए) **नहीं जानता, बेशक सभी छुपी बातों के जानने वाले आप ही हैं(116) मैंने तो उन से और कुछ नहीं कहा सिर्फ़ वो ही** (बात) **जो आपने मुझ से कहने के लिए कहा था कि तुम अल्लाह तआ़ला की इबादत करो जो मेरा भी रब है तुम्हारा भी रब है और मैं उन** (की हालत) **को जानता रहा जब तक उन में** (मौजूद) **रहा फिर जब आप ने मुझ को उठा लिया** (यानी पहली बार तो ज़िन्दा आसमान की तरफ़ और दूसरी बार मौत पर) **तो** (उस वक़्त सिर्फ़) **आप को उन की ख़बर** (रही कि उस वक़्त उन के भटकने की क्या वजह) **रही, और आप हर चीज़ की पूरी ख़बर रखते हैं(117) अगर आप उन को** (इस अक़ीदे पर) **सज़ा दें तो** (जब भी आप को हक़ है क्योंकि) **ये आप के बन्दे** (हैं और आप इन के मालिक) **हैं, और अगर आप इन को मुआफ़ कर दें तो** (जब भी आप को हक़ है क्योंकि) **आप ज़बरदस्त** (ताक़त वाले हैं और आप की मुआफ़ी भी हिकमत से होगी उसमें भी कोई बुराई नहीं हो सकती क्योंकि आप) **हिकमत वाले** (भी) **हैं(118)** (इन सारी बातों के बाद) **अल्लाह तआ़ला कहेंगे कि यह** (क़ियामत का दिन) **वो दिन है कि जो लोग** (दुनिया में अक़ीदे व ज़बान और कामों के) **सच्चे थे उन का सच्चा होना** (आज) **उन के काम आएगा,** (और वो काम आना यह है कि) **उन को** (जन्नत के) **बाग़** (रहने को) **मिलेंगे जिन के** (महलों के) **नीचे नहरें बहती होंगी जिन में वो**

**सदा-सदा को रहेंगे,** (और ये नेमतें उन को क्यों न मिलें क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला उन से राज़ी और ख़ुश और ये अल्लाह तआ़ला से राज़ी और ख़ुश हैं, यह** (जो कुछ बताया गया) **बड़ी भारी कामयाबी है** (कि दुनिया की कोई कामयाबी इसके बराबर नहीं होसकती कि सच्चा मालिक राज़ी होजाए)(119) **सारे आसमानो और ज़मीन और उन में जो कुछ है उस सब की बादशाही अल्लाह ही के लिए है, और वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है**(120)।

# 6-सूरत-अनआ़म

**इस मक्की सूरत में 20 रूकू और 165 आयतें हैं**

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

**शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ وَ جَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَ النُّوْرَ ۬ؕ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ۝۱ هُوَ
الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰۤى اَجَلًا ؕ وَ اَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝۲ وَ هُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَ
فِي الْاَرْضِ ؕ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ ۝۳ وَ مَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا
عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝۴ فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ؕ فَسَوْفَ يَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۵ اَلَمْ
يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَ اَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ۪
وَّ جَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝۶ وَ لَوْ نَزَّلْنَا
عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِاَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۷ وَ قَالُوْا لَوْ لَاۤ
اُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ؕ وَ لَوْ اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْاَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ ۝۸ وَ لَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّ
لَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ ۝۹ وَ لَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝۱۰ ع قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝۱۱

आयत न० 01 से 11

**सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और अन्धेरों को और रौशनी को बनाया, फिर भी काफ़िर लोग** (इबादत में) **दूसरों को अपने रब की बराबर ठहराते हैं(01) वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिसने तुम** (सब) **को** (आदम अ़लैहिस्सलाम के वास्ते से) **मिट्टी से बनाया फिर** (तुम्हारे मरने का) **एक वक़्त तय कर दिया, और दूसरा तय किया हुआ वक़्त** (दोबारा ज़िन्दा हो कर उठने का) **ख़ास अल्लाह ही को पता है फिर भी तुम** (में से कुछ लोग) **शक रखते हो** (कि क़ियामत को अनहोनी बात समझते हो हालांकि जिस ने पहले ज़िन्दगी दी दोबारा ज़िन्दा कर देना उस के लिए क्या मुश्किल है)**(02) और वो अल्लाह ही** (सच्चा

माबूद) **है आसमानों में भी और ज़मीन में भी** (यानी और सब झूटे हैं), **वो तुम्हारी छुपी हुई बातों को भी और खुली बातों को भी** (बराबर) **जानते हैं और** (ख़ासकर) **तुम जो कुछ** (खुला या छुपा) **काम करते हो** (जिस पर इनआ़म या सज़ा मिलनी है) **उस को जानते हैं(03) और इन** (काफ़िरों) **के पास** (जब भी) **कोई निशानी उन के रब की निशानियों में से आई तो मुंह फेर लेते हैं(04) सो** (चूंकि उन की यह आदत बनी हुई है) **उन्होंने इस सच्ची किताब** (क़ुरआन) **को भी झूटा बताया जब कि वो उन के पास पहुंची, सो** (उन का यह झुटलाना ख़ाली न जाएगा बल्कि) **जल्दी ही उन को ख़बर मिल जाएगी उस चीज़ की जिसके साथ ये लोग हंसी किया करते थे** (यानी क़ुरआन में जिस अ़ज़ाब की ख़बर सुन कर हंसा करते थे उसे आंखों से देख लेंगे)(05) **क्या उन्होंने नहीं देखा कि हम उन से पहले कितनी क़ौमों को** (अ़ज़ाब से) **हलाक कर चुके हैं जिन को हम ने दुनिया में ऐसी तरक़्क़ी दी थी कि तुम को वो तरक़्क़ी नहीं दी और हम ने उन पर आसमान से ख़ूब बारिशें बरसाईं, और हम ने उन के** (खेत और बाग़ों के) **नीचे से नहरें बहा दीं** (जिससे खेती और फलों की ख़ूब पैदावार हुई और ख़ुशहाल ज़िन्दगी बसर करने लगे) **फिर** (इसी हालत में) **हम ने उन को उन के गुनाहों की वजह से** (बहुत से अ़ज़ाबों से) **हलाक कर दिया और उन के बाद दूसरी क़ौमों को पैदा कर दिया** (तो अगर तुम पर भी अ़ज़ाब भेज दें तो अचम्भा क्या है)(06) **और अगर हम काग़ज़ पर लिखी हुई कोई किताब आप पर उतार देते फिर उस को ये लोग अपने हाथ से छू भी लेते** (जैसा कि उन की मांग थी कि लिखी हुई किताब आसमान से आजाए और हाथों से छू लेने का ज़िक्र करके नज़र बन्दी के शक को भी दूर कर दिया) **तब भी ये काफ़िर लोग** (हटधर्मी से) **ये ही कहते कि यह कुछ भी नहीं मगर खुला जादू** (है क्योंकि जब बात मानने का इरादा ही नहीं तो हर दलील में कोई न कोई नई बात निकाल लेना क्या मुश्किल) **है(07) और ये लोग यह भी कहते हैं कि इन** (पैग़म्बर) **के पास कोई फ़रिशता** (जिस को हम देखें और बातें सुनें) **क्यों नहीं भेजा गया,** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं) **और अगर हम कोई फ़रिशता** (इसी तरह) **भेज देते तो सारा क़िस्सा ही ख़त्म हो जाता फिर** (फ़रिशते के उतरने के बाद) **उन को कोई मोहलत न दी जाती** (क्योंकि अल्लाह तआ़ला का दस्तूर है कि जिन लोगों को मुंह मांगा मोजिज़ा दिखा दिया गया अगर फिर भी उन्होंने ईमान से इनकार किया तो फ़ौरन बिना मोहलत के अ़ज़ाब से हलाक कर दिया जाता और जब तक ऐसा मांगा हुआ मोजिज़ा न देखें दुनिया में मोहलत मिलती रहती है)(08) **और अगर हम फ़रिशते ही को पैग़म्बर बनाते तो** (अगर उस को फ़रिशते की सूरत में भेजते तो उस की दहशत इन्सानों से सहार न हो पाती इसलिए)

**हम उस** (फ़रिशते) **को इन्सान ही** (की शकल) **बनाते तो इस पर भी वो ही शक** (और ऐतराज़) **करते जो अब कर रहे हैं(09) और** (आप उन की बेहूदा मांगों से ग़म न करें क्योंकि) **आप से पहले जो पैग़म्बर हुए हैं उन के साथ भी** (मुख़ालिफ़ों ने) **मज़ाक़ किया फिर जिन लोगों ने उन से मज़ाक़ किया था उन को उस अ़ज़ाब ने आ घेरा जिस का वो मज़ाक़ उड़ाते थे(10)** (और अगर इस पर भी न मानें तो) **आप** (उन से) **कह दीजिए कि ज़रा ज़मीन में चलो फिरो फिर देखो कि** (पैग़म्बरों को) **झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ(11)।**

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ
فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٢ وَ لَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَ النَّهَارِ ؕ وَ هُوَ السَّمِيْعُ
الْعَلِيْمُ ۝١٣ قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ هُوَ يُطْعِمُ وَ لَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ
اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ وَ لَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٤

आयत न० 12 से 14

**आप** (इन मुख़ालिफ़ों से) **कह दीजिए कि जो कुछ आसमानों और ज़मीन में मौजूद है वो किस का है,** (पहली बात तो यह कि वो भी ये ही जवाब देंगे और अगर किसी वजह से न दें तो) **आप** (ही) **कह दीजिए कि सब का मालिक अल्लाह ही है,** (और उन से यह भी कह दीजिए कि) **अल्लाह तआ़ला ने** (अपनी महरबानी से तौबा करने वालों के साथ) **रहमत करना अपने ज़िम्मे ज़रूरी कर लिया है,** (और अगर ईमान न लाओगे तो फिर सज़ा भी भुगतना होगी क्योंकि) **तुम को अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन** (क़ब्रों से ज़िन्दा उठा कर हश्र के मैदान में) **जमा करेंगे** (और) **उस** (क़ियामत) **के आने में कोई शक नहीं,** (मगर) **जिन लोगों ने अपने को बर्बाद कर लिया है** (यानी अ़क़्ल से काम नहीं लेते) **वो ईमान न लाएंगे(12) और** (उन से यह भी कह दीजिए कि) **अल्लाह ही मालिक है उन सब का जो रात और दिन में रहते हैं** (यानी सब चीज़ों का मालिक अल्लाह ही है), **और वो ही सब से बड़ा सुनने वाला जानने वाला है(13)** (और) **आप कह दीजिए कि मैं** (उस) **अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी और को अपना माबूद बनाऊं** (जो) **आसमान और ज़मीन के पैदा करने वाले हैं और जो** (सब को) **खाना खिलाते हैं और उन को कोई नहीं खिलाता** (क्योंकि वो खाने पीने की ज़रूरत से पाक है), **कह दीजिए मुझ को** (तो) **यह हुक्म हुआ है कि सब से पहले मैं इस्लाम क़ुबूल कर लूं** (जिसमें तौहीद का अक़ीदा भी आ गया)

**और** (मुझ को यह कहा गया कि) **तुम मुशरिकों में से हरगिज़ न होना**(14)।

قُلْ اِنِّیْۤ اَخَافُ اِنْ عَصَیْتُ رَبِّیْ عَذَابَ یَوْمٍ عَظِیْمٍ ﴿۱۵﴾ مَنْ یُّصْرَفْ عَنْهُ یَوْمَىٕذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَ ذٰلِكَ الْفَوْزُ
الْمُبِیْنُ ﴿۱۶﴾ وَ اِنْ یَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَ اِنْ یَّمْسَسْكَ بِخَیْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِیْرٌ ﴿۱۷﴾ وَ هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَ هُوَ الْحَكِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۱۸﴾ قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ۫ شَهِیْدٌۢ
بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ۫ وَ اُوْحِیَ اِلَیَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَ مَنْۢ بَلَغَ ؕ اَىِٕنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً
اُخْرٰى ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّ اِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾ اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ
یَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا یَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِیْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا یُؤْمِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ وَ مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰیٰتِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا یُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿۲۱﴾

आयत न० 15 से 21

(और) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि अगर मैं अपने रब का कहना न मानूं** (कि इस्लाम या ईमान के हुक्मों को छोड़ दूं या शिर्क में पड़ जाऊं) **तो मैं एक बड़े दिन** (यानी क़ियामत) **के अ़ज़ाब से डरता हूं** (नबी से तो यह हो नहीं सकता कि वो अल्लाह का कहना न माने बल्कि यहां उम्मत को सुनाना है कि नबी मासूम भी अल्लाह के अ़ज़ाब से डरते हैं)(15) **जिस** (अ़ज़ाब का ज़िक्र हुआ वो ऐसा है कि जिस) **आदमी से उस दिन का अज़ाब हटा दिया गया उस पर अल्लाह तआ़ला ने बड़ा रहम किया, और यह** (अ़ज़ाब का हट जाना और अल्लाह की रहमत का होना) **बड़ी कामयाबी है**(16) **और** (आप उन को यह भी सुना दीजिए कि ऐ लोगों) **अगर तुम को अल्लाह तआ़ला कोई तकलीफ़** (दुनिया या आख़िरत में) **पहुंचा दें तो उस का दूर करने वाला सिवाए अल्लाह तआ़ला के कोई नहीं, और** (इसी तरह) **अगर तुम को कोई नफ़ा पहुंचा दें** (तो उस का भी कोई हटाने वाला नहीं) **वो हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखने वाले हैं**(17) **और वो ही** (अल्लाह तआ़ला अपनी क़ुदरत से) **अपने बन्दों पर ज़ोर आवर** (हैं और सब उन के मुहताज) **हैं, और वो ही बड़ी हिकमत वाले और पूरी ख़बर रखने वाले हैं**(18) **आप** (इन इनकार करने वालों से) **कहिए कि** (अच्छा यह तो बताओ कि) **सब से बढ़ कर चीज़ गवाही देने के लिए कौन** (है जिसकी गवाही पर सारा झगड़ा मिट जाए, उस का जवाब ये ही होगा कि अल्लाह तआ़ला सबसे बढ़ कर) **है,** (फिर) **आप कह दीजिए कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह तआ़ला गवाह हैं** (जिस की

गवाही सब से बढ़ कर है), **और** (उन की गवाही यह है कि) **मेरे पास यह कुरआन भेजा गया वही से** (अल्लाह की तरफ़ से) **ताकि मैं इस कुरआन के वास्ते से तुम को और जिस-जिस को यह कुरआन पहुंचे उन सब को** (उन सज़ाओं से) **डराऊं** (जो इनकार करने वालों पर इसमें बताई गईं हैं, और कुरआन के चैलेंज के बावजूद इसकी एक आयत के बराबर भी लाने से सब लोगों का मजबूर होना इसके अल्लाह का कलाम होने का सबूत है और इसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की गवाही देना उन की सच्चाई पर गवाही है), **क्या तुम** (इस बड़ी गवाही के बाद भी तौहीद के बारे में) **सचमुच ये ही गवाही दोगे कि अल्लाह तआ़ला के साथ** (इबादत में) **कुछ और ख़ुदा भी** (साझी) **हैं,** (अगर वो फिर भी हटधर्मी करें तो) **आप कह दीजिए कि मैं तो इसकी गवाही नहीं देता** (और) **कह दो ख़ुदा तो सिर्फ़ एक है और बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से नफ़रत करता हूं**(19) (और आप की पैग़म्बरी के बारे में जो ये लोग कहते हैं कि हमने यहूदियों व ईसाइयों से पूछ कर देख लिया तो इस का जवाब यह है कि) **जिन लोगों को हमने किताब** (तौरेत व इन्जील) **दी है वो सब लोग रसूल** (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **को** (ऐसा) **पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचाने हैं,** (फिर भी) **जिन लोगों ने अपने को बर्बाद कर लिया है** (यानी समझ से काम नहीं लेते) **वो ईमान न लाएंगे**(20) (और) **उससे ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लाह पर झूटा इल्ज़ाम लगाए या अल्लाह तआ़ला की आयतों को झूटा बताए, ऐसे बेइन्साफ़ों को** (क़ियामत के दिन) **रिहाई न मिलेगी** (बल्कि सदा अ़ज़ाब में गरिफ़्तार रहेंगे)(21)।

**नोटः-** तौरेत व इन्जील में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में इतना साफ़-साफ़ बयान है कि उस में किसी शक शुबह की गुन्जाइश नहीं रहती इस लिए कहा गया कि किताब वाले आप के नबी होने को ऐसा जानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं कि उस में कोई शक नहीं होता।

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० ने फ़रमाया कि जिस आदमी को कुरआन पहुंच गया वो ऐसा हो गया जैसे उसने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ियारत कर ली। (मआ़रिफ़ुल कुरआन)

وَ يَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَاۤؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿۲۲﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ
فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿۲۳﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿۲۴﴾ وَ مِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَ جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَ اِنْ

يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۭ حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٥ وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْــــَٔـوْنَ عَنْهُ ۚ وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٦

आयत न० 22 से 26

**और** (वो वक़्त भी याद करो) **जिस दिन हम सभी लोगों को** (हश्र के मैदान में) **जमा करेंगे फिर हम मुशरिकों से** (वास्ते से या बिना वास्ते के) **कहेंगे कि** (बताओ) **तुम्हारे वो ख़ुदा कहां गये जिन को तुम** (अल्लाह का) **साझी बनाते थे** (कि तुम्हारी सिफ़ारिश नहीं करते जिस पर तुम को भरोसा था)(22) **फिर उन के पास कोई बहाना नहीं होगा कि वो** (उस शिर्क से नफ़रत दिखाते हुए और घबरा कर) **यह कहेंगे क़सम अल्लाह की अपने रब की हम मुशरिक नहीं थे**(23) (अल्लाह तआ़ला ने कहा) **ज़रा देखो तो किस तरह** (साफ़) **झूट बोला अपनी जानों पर और जिन चीज़ों को वो झूटमूट बनाया करते थे** (यानी उन के बुत और जिन को वो ख़ुदा का साझी ठहराते थे) **वो सब ग़ाइब हो गये**(24) **और इन** (मुशरिकों) **में कुछ ऐसे हैं कि** (आप के क़ुरआन पढ़ने के वक़्त उस के सुनने के लिए) **आप की तरफ़ कान लगाते हैं** (मगर चूंकि यह सुनना सच्चाई की तलाश में नहीं सिर्फ़ तमाशे या हंसी उड़ाने की नीयत से होता है) **और** (इसलिए) **हमने उन के दिलों पर पर्दे डाल रक्खे हैं कि वो इस** (क़ुरआन के मतलब) **को समझें और कानों को बहरा कर दिया है** (कि वो इस को हिदायत के लिए नहीं सुनते, और आंखों की हालत यह है कि) **अगर वो लोग** (आप की पैग़म्बरी की सच्चाई के) **सारे सबूतों को** (भी) **देख लें उन पर भी ईमान न लाएंगे,** (उन की हटधर्मी की नौबत) **यहां तक** (पहुंची है) **कि जब ये लोग आप के पास आते हैं तो आप से बेबात बहस करते हैं** (इस तरह कि) **ये काफ़िर लोग यह कहते हैं कि यह** (क़ुरआन) **तो कुछ भी नहीं सिर्फ़ बेसनद बाते हैं जो पहले लोगों से** (कही) **चली आती** (हैं यानी मज़हब वाले पहले से ऐसी बातें करते चले आते हैं कि अल्लाह एक ही है और यह कि इन्सान अल्लाह का पैग़म्बर हो सकता है, क़ियामत में फिर ज़िन्दा होना है मतलब जिस का यह कि झुटलाते) **हैं**(25) **और फिर ये लोग इस** (क़ुरआन) **से दूसरों को भी रोकते हैं और ख़ुद भी** (इससे नफ़रत की वजह से) **दूर-दूर रहते हैं, और** (इन हरकतों से) **ये लोग अपने ही को तबाह कर रहे हैं और** (बेवक़ूफ़ी और दुशमनी से) **कुछ ख़बर नहीं रखते** (कि हम किसका नुक़सान कर रहे हैं हमारे इस काम से रसूल और क़ुरआन का तो कुछ बिगड़ता नहीं)(26)।

**नोटः**- एक हदीस में है कि "आदमी पूरा मोमिन उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक झूट को बिल्कुल न छोड़ दे यहां तक कि मज़ाक़ दिल्लगी में भी झूट न बोलें"। (मसनद अहमद)
और एक हदीस में है कि "झूट इन्सान की रोज़ी को घटा देता है"। (बैहक़ी)

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢٧ بَلْ بَدَا
لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٢٨ وَقَالُوْٓا اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا
الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ۝٢٩ وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ
قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٣٠ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ حَتّٰىٓ اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ
بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ۝٣١ وَمَا
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٣٢

आयत न० 27 से 32

**और अगर आप** (उन को) **उस वक़्त देखें** (तो बड़ी डरावनी हालत दिखाई दे) **जब कि ये** (इनकार करने वाले) **दोज़ख़ के पास खड़े किये जाएगें** (और जहन्नम में डाले जाने वाले होंगे) **तो** (हज़ारों तमन्नाओं के साथ) **कहेंगे कि हाय क्या अच्छी बात होती कि हम** (दुनिया में) **फिर वापस भेज दिये जाएं और अगर ऐसा हो जाए तो हम** (फिर) **अपने रब की आयतों** (जैसे क़ुरआन) **को भी झूटा न बताएं और हम** (ज़रूर) **ईमान वालों में से हो जाएं(27)** (अल्लाह तआ़ला कहते हैं कि उन की यह तमन्ना और वादा सच्चे इरादे से नहीं) **बल्कि** (इस वक़्त एक मुसीबत में फंस रहे हैं कि) **जिस चीज़ को इससे पहले** (दुनिया में) **छुपाया** (और इनकार किया) **करते थे आज उन के सामने आ गई है** (यानी आख़रत का अ़ज़ाब, और अब जान बचाने को ये सारे वादे हो रहे हैं), **अगर** (मान लो) **ये लोग** (दुनिया में) **फिर वापस भेज दिये जाएं तब भी ये वो ही काम करेंगे जिससे उन को मना किया गया था** (यानी कुफ़्र व नाफ़रमानी) **और बेशक ये** (इन वादों में) **बिल्कुल झूटे हैं** (यानी न इस वक़्त वादा पूरा करने का इरादा है न दुनिया में जाकर उन से वादा पूरा करने की उम्मीद है)(28) **और ये** (इनकार करने वाले) **कहते हैं कि ज़िन्दगी और कहीं नहीं बस ये ही दुनिया की ज़िन्दगी और हम** (इस ज़िन्दगी के ख़त्म होने के बाद फिर) **ज़िन्दा न किये जाएंगे** (जैसा कि पैग़म्बर कहते हैं)(29) **और अगर आप** (इन को) **उस वक़्त देखें जब कि ये**

**अपने रब के सामने** (हिसाब के लिए) **खड़े किये जाएंगे, और अल्लाह तआ़ला उन से कहेंगे कि** (कहो) **क्या यह** (क़ियामत के दिन दोबारा ज़िन्दा होना) **सच्ची बात नहीं है, वो कहेंगे बेशक** (सच्ची बात है) **क़सम है अपने रब की, अल्लाह तआ़ला कहेंगे तो अब अपने कुफ़्र** (की सज़ा) **का मज़ा चक्खो** (इस के बाद दोज़ख़ में भेज दिये जाएंगें)(30) **बेशक** (बड़े) **नुक़सान में हैं वो लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को** (यानी क़ियामत के दिन ज़िन्दा हो कर अल्लाह तआ़ला के सामने पेश होने को) **झुटलाया,** (और यह झुटलाना थोड़े दिनों रहेगा) **यहां तक कि जब वो तय किया हुआ वक़्त** (यानी क़ियामत का दिन) **उन पर अचानक** (बिना ख़बर) **आ पहुंचेगा** (उस वक़्त सारे दावे और झुटलाना ख़त्म हो जाएंगे और) **कहने लगेंगे हाय अफ़सोस हमारी ग़लती** (और भूल) **पर जो उस** (क़ियामत) **के बारे में** (हम से) **हुई और हालत उन की यह होगी कि वो अपने** (कुफ़्र और नाफ़रमानी का) **बोझ अपने ऊपर लादे हुए होंगे, अच्छी तरह सुन लो बुरी होगी वो चीज़ जिस को अपने ऊपर लादे होंगे**(31) **और दुनिया की ज़िन्दगी तो खेल तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं** (बाक़ी न रहने और बेनफ़ा होने की वजह से), **और आख़रत का घर परहेज़गारों के लिए बेहतर है, क्या तुम** (इतना भी) **नहीं समझते**(32)।

**नोटः-** एक हदीस में है कि अक़लमन्द होशियार वो आदमी है जो अपने कामों को जांचता रहे और गुज़ारे की रोज़ी पर राज़ी हो जाए और मरने के बाद की तैयारी के काम करे।

(मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَ لٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ۝٣٣ وَ لَقَدْ
كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَ اُوْذُوْا حَتّٰۤى اَتٰىهُمْ نَصْرُنَا ۚ وَ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَ لَقَدْ
جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِی الْمُرْسَلِيْنَ ۝٣٤ وَ اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ
سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ؕ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٣٥ اِنَّمَا
يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ وَ الْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝٣٦ وَ قَالُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ
قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰۤى اَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٧ وَ مَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ وَ لَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ
بِجَنَاحَيْهِ اِلَّاۤ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝٣٨ وَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
صُمٌّ وَّ بُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ وَ مَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٣٩ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ

اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۞ بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا
تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ۞

आयत न० 33 से 41

(ऐ पैग़म्बर) **हम अच्छी तरह जानते हैं कि आप को इन** (काफ़िरों) **की बातें दुःख पहुंचाती हैं तो** (आप दुखी न हों बल्कि इन का मुआमला अल्लाह पर छोड़िए क्योंकि) **ये लोग** (सीधे) **आप को झूटा नहीं कहते लेकिन ये ज़ालिम तो अल्लाह की आयतों का** (जान बूझ कर) **इनकार करते हैं** (हां इससे आप को भी झुटलाया जाता है)(33) **और** (काफ़िरों का यह झुटलाना कोई नई बात नहीं बल्कि) **बहुत से पैग़म्बर जो आप से पहले हुए हैं उन को भी झुटलाया जा चुका है जिस पर उन्होंने सब्र ही किया** (जब) **कि उन को झुटलाया गया और उन को** (तरह-तरह की) **तकलीफ़ें पहुंचाईं गई यहां तक कि हमारी मदद उन को पहुंच गई** (जिस से मुख़ालिफ़ हार गये उस वक़्त तक वो सब्र ही करते रहे), **और** (इसी तरह सब्र करने के बाद आप को भी अल्लाह की मदद पहुंचेगी क्योंकि) **अल्लाह की बातों** (यानी वादों) **को कोई बदलने वाला नहीं** (और मदद का वादा आप से हो चुका), **और आप के पास पैग़म्बरों के कुछ क़िस्से** (क़ुरआन में) **पहुंच चुके हैं** (कि जिन में अल्लाह की मदद का आना और दुशमनों का हार जाना बयान किया गया है)(34) **और** (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चूंकि सारे इन्सानों के साथ बेहद मुहब्बत थी इस लिए आप यह चाहते थे कि ये मुशरिक लोग जिस तरह के मोजिज़े मांगते हैं वो ही पूरे हो जाएं तो शायद ईमान ले आएं और कुफ़्र से बच जाएं मगर अल्लाह तआ़ला किसी वजह से ये मांगे मोजिज़े पूरे करना नहीं चाहते थे इसलिए कहते हैं कि) **अगर आप को इन लोगों का मुंह मोड़े रहना** (और इनकार करना) **भारी लगता है** (और इसलिए जी चाहता है कि उन के मांगे मोजिज़े दिखा दिये जाएं) **तो अगर आप के बस में यह है कि ज़मीन में** (जाने को) **कोई सुरंग या आसमान में** (जाने को) **कोई सीढ़ी तलाश कर लो फिर** (उससे ज़मीन या आसमान में जाकर वहां से मांगे हुए मोजिज़े में से कोई) **मोजिज़ा ले आओ तो** (अच्छा है आप) **ऐसा कर लो** (हम तो उन की मांग पूरी नहीं करते), **और अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो उन सब को सीधे रास्ते पर जमा कर देते** (लेकिन चूंकि ये अपने आप ही अपना भला नहीं चाहते इस लिए अल्लाह तआ़ला ने भी नहीं चाहा) **तो आप** (इस फ़िक्र को छोड़िए और) **नादानों में से न होजिए**(35) (हक़ बात को तो) **वो ही लोग मानते हैं जो** (मानने के इरादे से) **सुनते हैं, और** (अगर इस इनकार पर पूरी सज़ा उन को दुनिया में न मिली तो

क्या हुआ आख़िर एक दिन) **मुर्दों को अल्लाह तआला क़ब्रों से ज़िन्दा करके उठाएंगे फिर वो सब अल्लाह ही की तरफ़** (हिसाब के लिए) **लाए जाएंगे(36) और ये** (इनकार करने वाले) **लोग** (हटधर्मी से) **कहते हैं कि अगर ये नबी हैं तो इन पर** (हमारे मांगे हुए मोजिज़े में से) **कोई मोजिज़ा क्यों नहीं उतारा गया, आप कह दीजिए कि अल्लाह तआला को बेशक पूरी क़ुदरत है इस पर कि वो** (ऐसा ही) **मोजिज़ा उतार दें लेकिन उन में अक्सर लोग** (इस के अन्जाम को) **जानते नहीं** (इसलिए ऐसी मांग कर रहे हैं और वो अन्जाम यह है कि अगर फिर भी ईमान न लाएंगे तो सब फ़ौरन हलाक कर दिये जाएंगे)(37) **और जितनी क़िस्म के जानदार ज़मीन पर** (चाहे सूखे में या पानी में) **चलने वाले हैं और जितनी क़िस्म के परिन्दे अपने परों से उड़ते हैं उन में कोई क़िस्म ऐसी नहीं जो कि** (क़ियामत के दिन ज़िन्दा होकर उठने में) **तुम्हारी तरह के गिरोह न हों,** (और) **हम ने** (अपने) **दफ़्तर** (लोहे महफ़ूज़) **में कोई चीज़** (जो क़ियामत तक होने वाली है बे लिखे) **नहीं छोड़ी फिर** (इस के बाद अपने तय वक़्त पर) **सब** (इन्सान और जानवर) **अपने रब के पास जमा हो जाएंगे(38) और जो लोग हमारी आयतों को झुटलाते हैं वो** (हक़ बात के सुनने से) **बहरे** (जैसे) **और** (हक़ बात कहने से) **गूंगे** (जैसे) **हो रहे हैं** (और इस की वजह से) **तरह-तरह के अन्धेरों में** (भटकते) **हैं, अल्लाह तआला जिस को चाहें** (उस की हटधर्मी की वजह से) **बेराह कर दें और वो जिस को चाहें** (अपनी महरबानी से) **सीधी राह पर लगा दें(39) आप इन** (मुशरिकों से) **कह दीजिए कि** (अच्छा) **यह तो बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का कोई अज़ाब आजाए या तुम पर क़ियामत ही आ पहुंचे तो क्या** (उस अज़ाब को या क़ियामत के डर को हटाने के वास्ते) **अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे,** (और ऐसा करके देख लो) **अगर तुम** (शिर्क के दावे में) **सच्चे हो(40)** (लेकिन ऐसा नहीं) **बल्कि** (उस वक़्त तो) **ख़ास उसी** (अल्लाह) **को पुकारने लगो फिर जिस** (मुसीबत को हटाने) **के लिए तुम** (उस को) **पुकारो अगर वो चाहे तो उस को हटा भी दे** (और न चाहे तो न भी हटाए) **और जिन को तुम** (अब अल्लाह का) **साझी ठहराते हो** (उस वक़्त) **उन सब को भूल जाओगे(41)**

**नोटः-** एक हदीस में है कि "क़ियामत के दिन सब हक़ वालों के हक़ अदा किये जाएंगे यहां तक कि बेसींग की बकरी का बदला सींग वाली बकरी से भी लिया जाएगा" और इसके बाद सब जानवर मिट्टी बना दिये जाएंगे। (बैहक़ी)

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰۤى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ ﴿۴۲﴾ فَلَوْ لَاۤ اِذْ جَآءَهُمْ
بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَ لٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۴۳﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ؕ حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوْا بِمَاۤ اُوْتُوْۤا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿۴۴﴾ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۴۵﴾

आयत न० 42 से 45

**और हम ने आप से पहली उम्मतों की तरफ़ भी पैग़म्बर भेजे थे** (मगर उन लोगों ने उन पैग़म्बरों को न माना) **तो हम ने उन को ग़रीबी और बीमारी से पकड़ा ताकि वो ढीले पड़ जाएं** (और अपने कुफ़्र और गुनाह से तौबा कर लें)(42) **तो जब उन को हमारी सज़ा पहुंची थी वो ढीले क्यों न पड़े** (कि उन का जुर्म मुआफ़ हो जाता) **लेकिन उन के दिल तो** (वैसे ही) **सख़्त** (के सख़्त) **रहे और शैतान उन के बुरे कामों को उन की समझ में भले करके दिखाता रहा**(43) **फिर जब वो लोग** (उसी तरह) **उन चीज़ों को भूले** (और छोड़े) **रहे जिन की उन को** (पैग़म्बरों की तरफ़ से) **नसीहत की जाती थी** (यानी ईमान व ताबेदारी) **तो हम ने उन पर** (ऐश व ख़ुशी की) **हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये, यहां तक कि जब उन चीज़ों पर जो कि उन को मिली थी वो ख़ूब इतरा गये** (और उन का कुफ़्र और बढ़ गया उस वक़्त) **हम ने उन को अचानक** (अ़ज़ाब से) **पकड़ लिया** (और सख़्त अ़ज़ाब भेजा जिस का ज़िक्र क़ुरआन में जगह-जगह आया है) **बस उस वक़्त वो नाउम्मीद हो कर रह गये(44) फिर** (उस अ़ज़ाब से) **ज़ालिम लोगों की जड़** (तक) **कट गई, और अल्लाह का शुक्र है जो सारे जहानों का रब है** (कि ऐसे ज़ालिमों का पाप कट गया जिन की वजह से दुनिया में नुहूसत फैलती थी)(45)।

**नोटः-** एक हदीस में है कि ''जब तुम यह देखो कि किसी इन्सान पर नेमत व दौलत बरस रही है हालांकि वो अपने गुनाहों और नाफ़रमानियों पर जमा हुआ है तो समझ लो कि उस को ढील दी जा रही है'' यानी उस की ऐश व मस्ती उस के सख़्त अ़ज़ाब में पकड़े जाने की तरफ़ एक निशानी है। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَ اَبْصَارَكُمْ وَ خَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ
كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿۴۶﴾ قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا

الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٤٧ وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ
لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٤٨ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٤٩ قُلْ لَّاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ
خَزَاۤىِٕنُ اللّٰهِ وَلَاۤ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَاۤ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰۤى اِلَيَّ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِى
الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ۝٥٠ وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْۤا اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ
دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٥١

आयत न० 46 से 51

**आप** (इन से यह भी) **कह दीजिए कि यह बताओ अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारे सुनने की ताक़त और तुम्हारी आंखों** (की रौशनी) **को तुम से छीन ले** (कि न तुम को कुछ सुनाई दे न दिखाई दे) **और तुम्हारे दिलों पर बन्द लगादे** (कि तुम दिल से किसी चीज़ को समझ न सको) **तो अल्लाह तआ़ला के सिवा और कोई ख़ुदा है कि ये** (चीज़ें) **तुम को फिर देदे** (जब तुम भी मानते हो कि ऐसा कोई नहीं फिर कैसे किसी को इबादत का हक़दार समझते हो)**, आप देखिये तो हम किस तरह अलग-अलग** (तरीक़ों से) **दलीलें बयान कर रहे हैं** (फिर भी) **ये मुंह फेर लेते हैं (46) आप** (इन से यह भी) **कहिए कि यह बताओ कि अगर तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब अचानक** (यानी बेख़बरी में) **या होशियारी में आ जाए तो क्या सिवाए ज़ालिम लोगों के** (इस अ़ज़ाब से) **और भी कोई हलाक किया जाएगा** (मतलब यह है कि अगर अ़ज़ाब आया तो वो तुम्हारे ज़ुल्म की वजह से तुम पर ही आएगा मोमिन बचे रहेंगे इसलिए तुम को होश करना चाहिए)**(47) और हम पैग़म्बरों को सिर्फ़ इस वास्ते भेजा करते हैं कि वो** (ईमान वालों और नेकों को जन्नत की नेमतों की) **ख़ुशख़बरी दें और** (कुफ़्र व गुनाह करने वालों को अल्लाह की नाराज़ी से) **डराएं, फिर** (इस के बाद) **जो आदमी ईमान ले आए और** (अपने ऐतक़ाद और कामों को) **सुधार ले तो उन लोगों को** (आख़रत में) **न कोई डर होगा और न कोई ग़म होगा(48) और जो लोग** (पैग़म्बरों के समझाने के बाद भी) **हमारी आयतों को झूटा बताएं उन को** (कभी तो दुनिया में भी वर्ना आख़रत में तो ज़रूर) **अज़ाब पहुंच कर रहता है इस वजह से कि वो ईमान की हद से निकल जाते हैं(49) आप** (इन नाफ़रमान लोगों से) **कह दीजिए कि न तो मैं तुम से यह कहता हूं कि मेरे पास अल्लाह तआ़ला के सारे ख़ज़ाने हैं** (कि जो कुछ मुझ से मांगा जाए वो अपनी मर्ज़ी से देदूं) **और न मैं सारी ग़ैब की चीज़ों को जानता हूं** (जो कि अल्लाह तआ़ला की शान है) **और न**

**मैं तुम से यह कहता हूं कि मैं फ़रिशता हूं, मैं तो सिर्फ़ उस वही की ताबेदारी करता हूं जो मेरे पास आती है** (जिसमें खुद उस पर चलना भी दाख़िल है और दूसरों को नसीहत करना भी जैसा कि पहले सभी नबियों का भी ये यही हाल था, फिर) **आप उन से कहिए कि अन्धा और देखने वाला कहीं बराबर हो सकता है,** (और जब यह बात सब मानते हैं) **तो क्या तुम** (आंखों वाला बनना नहीं चाहते और इस बारे में) **सोचते नहीं** (कि सही बात समझ में आजाए)**(50) और** (अगर इस पर भी वो ज़िद से बाज़ न आएं तो उन से बहस बन्द कर दीजिए और) **ऐसे लोगों को** (कुफ़्र और गुनाह पर अल्लाह के अज़ाब से) **डराइये जो इस बात से डरते हैं** (कि क़ियामत में) **अपने रब के पास ऐसी हालत में जमा किये जाएंगे कि** (अल्लाह के सिवा जिस जिस को मददगार या सिफ़ारिश करने वाला काफ़िरों ने समझा था इस वक़्त उन में से) **न उन का कोई मददगार होगा और न कोई** (अपनी मर्ज़ी से) **सिफ़ारिश करने वाला शायद ये लोग अज़ाब से डर जाएं** (और कुफ़्र व गुनाह से बाज़ आजाएं)**(51)।**

**नोटः-** यहां मालूम हुआ कि हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ग़ैब का इल्म नहीं अलबत्ता अल्लाह की सारी मख़लूक़ में सब से ज़्यादा इल्म आप को ही है लेकिन ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को ही है। दूसरी बात जब खुदाई के सारे ख़ज़ाने हुज़ूर के हाथ में भी नहीं तो किसी बुज़ुर्ग या वली के बारे में यह सोचना कि वो जो चाहे कर सकते हैं जिस को जो चाहे दे सकते हैं खुली हुई जहालत हैं।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا
مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٢﴾ وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا
اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ﴿٥٣﴾ وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا
فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًۢا بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥٤﴾ وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٥٥﴾

आयत न० 52 से 55

**नोटः-** काफ़िरों के कुछ असरदार लोगों और सरदारों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहलाया कि आप की बात सुनने और मानने से हमारे लिए एक रूकावट यह भी है कि आप के

आस-पास हर वक़्त वो लोग रहते हैं जो या तो हमारे गुलाम थे हम ने उन को आज़ाद कर दिया और या वो लोग जो हमारी महरबानी पर ज़िन्दगी गुज़ारते थे। उन ग़रीब ज़लील लोगों के होते हुए हम आप की मजलिस में नहीं आ सकते अगर हमारे आने के वक़्त उन लोगों को मजलिस से हटा दिया करें तो हम आप की बात सुनें और सोचें। इस पर ये आयतें उतरीं:-

**और उन लोगों को** (अपनी मजलिस से) **न निकालना जो सुबह व शाम** (यानी सदा) **अपने रब की** (सच्चे दिल से) **इबादत करते हैं सिर्फ़ उस को राज़ी करने के लिए** (यानी दुनिया का लालच नहीं रखते)**, उन** (के मन) **का हिसाब** (और छान बीन) **ज़रा भी आप के ज़िम्मे नहीं और** (जैसा कि) **आप** (के मन) **का हिसाब** (और पूछ ताछ) **ज़रा भी उन के ज़िम्मे नहीं जिससे आप उन को निकाल दें वर्ना** (उन के निकालने से) **आप नाइन्साफ़ी का काम करने वालों में हो जाएंगे(52) और** (हम ने जो मोमिनों को ग़रीब और काफ़िरों को अमीर बना रक्खा है तो इसकी वजह यह है कि) **इसी तरह हम ने** (उन में से) **कुछ लोगों** (यानी काफ़िरों) **को** (दूसरे) **कुछ लोगों** (यानी मोमिनों) **के वास्ते से इम्तिहान में डाल रक्खा है** (यानी इस तरीक़े से काफ़िरों को आज़माया जाता है) **ताकि ये लोग** (मोमिनों के बारे में) **कहा करें क्या ये ही लोग हैं कि हम सब में से** (चुन कर के) **उन पर अल्लाह तआ़ला ने अपना अहसान किया** (है यानी अपने दीन इस्लाम के लिए उन को चुना) **है, क्या यह बात नहीं है कि अल्लाह तआ़ला अपने शुक्र अदा करने वाले बन्दों को अच्छी तरह जानता है** (इन ग़रीब लोगों ने सच्चे मालिक का हक़ पहचाना तो सच्चा दीन पाया और इन अमीरों ने नाशुक्री और कुफ़्र किया वो इस नेमत को नहीं पा सके)**(53) और जब वो लोग आप के पास आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं तो आप** (उन को ख़ुशख़बरी सुनाने के लिए) **यह कह दीजिए कि तुम पर सलामती है** (यानी काफ़िरों पर जो हर तरह की मुसीबतें आख़रत में पड़ेंगी उन से तुम बचे रहोगे, और दूसरे यह भी कि) **तुम्हारे रब ने** (अपनी महरबानी से) **रहमत करना** (और तुम को नेमत देना) **अपने ज़िम्मे ज़रूरी कर लिया है** (यहां तक) **कि जो आदमी तुम में से कोई बुरा काम कर बैठे** (जो कि) **जहालत से** (हो जाता है, मगर) **फिर वो उस के बाद तौबा कर ले और** (आगे को अपने कामों का) **सुधार कर ले** (इसमें यह भी आगया कि अगर वो तौबा टूट जाए तो फिर तौबा कर ले) **तो अल्लाह तआ़ला** (की यह शान है कि उस के लिए भी) **बड़े मुआफ़ करने वाले हैं** (कि गुनाह की सज़ा भी मुआफ़ कर देंगे और) **बड़ी रहमत करने वाले हैं** (कि तरह-तरह की नेमतें भी देंगे)**(54) और इस तरह हम आयतों को साफ़-साफ़**

**बयान करते हैं** (ताकि मोमिनों का तरीक़ा भी पता चल जाए) **और ताकि मुजरिमों का तरीक़ा** (भी) **खुल कर सामने आ जाए** (और सच और झूट के साफ़ हो जाने से सच्चे दीन के चाहने वालों को रास्ता पाना आसान हो जाए)(55)।

قُلْ اِنِّیْ نُهِیْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّاۤ اَتَّبِعُ اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّ مَاۤ اَنَا مِنَ
الْمُهْتَدِیْنَ ۝٥٦ قُلْ اِنِّیْ عَلٰی بَیِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّیْ وَ كَذَّبْتُمْ بِهٖ ؕ مَا عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ
یَقُصُّ الْحَقَّ وَ هُوَ خَیْرُ الْفٰصِلِیْنَ ۝٥٧ قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِیْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِیَ الْاَمْرُ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكُمْ ؕ وَ
اللّٰهُ اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِیْنَ ۝٥٨ وَ عِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَیْبِ لَا یَعْلَمُهَاۤ اِلَّا هُوَ ؕ وَ یَعْلَمُ مَا فِی الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ وَ مَا تَسْقُطُ
مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا یَعْلَمُهَا وَ لَا حَبَّةٍ فِیْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَ لَا رَطْبٍ وَّ لَا یَابِسٍ اِلَّا فِیْ كِتٰبٍ مُّبِیْنٍ ۝٥٩ وَ هُوَ الَّذِیْ
یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَ یَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ فِیْهِ لِیُقْضٰۤی اَجَلٌ مُّسَمًّی ۚ ثُمَّ اِلَیْهِ مَرْجِعُكُمْ
ثُمَّ یُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٦٠ وَ هُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَ یُرْسِلُ عَلَیْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤی اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَ هُمْ لَا یُفَرِّطُوْنَ ۝٦١ ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَی اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا لَهُ الْحُكْمُ ۫ وَ هُوَ اَسْرَعُ
الْحٰسِبِیْنَ ۝٦٢

आयत न० 56 से 62

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (इन मुख़ालिफ़ों से) **कह दीजिए कि मुझ को** (अल्लाह की तरफ़ से) **इससे मना किया गया है कि उन** (झूटे ख़ुदाओं) **की इबादत करूं जिन की तुम लोग अल्लाह** (की तौहीद) **को छोड़ कर इबादत करते हो,** (और) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि मैं तुम्हारे ग़लत तरीक़े पर नहीं चल सकता क्योंकि** (अगर अल्लाह की पनाह मैं ऐसा करूं तो) **इस हालत में गुमराह हो जाउंगा और** (सीधी) **राह पर चलने वालों में न रहूंगा(56) आप** (उन से यह भी) **कह दीजिए कि मेरे पास तो** (इस दीने इस्लाम के सच्चा होने पर) **एक दलील** (काफ़ी मौजूद है जो) **मेरे रब की तरफ़ से** (मुझ को मिली) **है** (यानी क़ुरआन मजीद जो कि मेरा मोजिज़ा है जिससे मेरी तसदीक़ होती है) **और तुम** (बेवजह) **इस को झुटलाते हो,** (और तुम जो यह कहते हो कि अगर दीने इस्लाम सच्चा है तो हमारे इनकार पर आसमान से अज़ाब आए तो उस का जवाब यह है कि) **जिस चीज़ का तुम तक़ाज़ा कर रहे हो** (यानी दर्दनाक अ़ज़ाब) **वो मेरे पास** (यानी मेरे बस में) **नहीं, हुक्म किसी का नहीं** (चलता) **सिवाए अल्लाह के** (और अल्लाह का हुक्म अ़ज़ाब आने का

हुआ नहीं तो मैं कैसे अज़ाब दिखा दूं), **अल्लाह तआला हक़ बात को** (दलील से) **बता देते हैं और सब से अच्छा फ़ैसला करने वाले वो ही हैं** (सो अल्लाह ने मेरी पैग़म्बरी क़ुरआन से साबित कर दी है)(57) **आप कह दीजिए कि अगर मेरे पास** (यानी मेरे बस में) **वो चीज़ होती जिस का तुम तक़ाज़ा कर रहे हो** (यानी अज़ाब) **तो** (अब तक) **मेरा और तुम्हारा आपसी झगड़े का** (कभी का) **फ़ैसला हो चुका होता, और ज़ालिमों को अल्लाह तआला ख़ूब जानते हैं** (कि किसके साथ कब क्या बरताव किया जाए)(58) **और अल्लाह तआला के पास** (यानी उसी की क़ुदरत में) **हैं ख़ज़ाने ग़ैब के जिन को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह तआला के, और वो उन सभी चीज़ों को भी जानते हैं जो सूखे में हैं और जो पानी में हैं, और कोई पत्ता** (तक पेड़ से) **नहीं गिरता मगर वो उस को भी जानता है और कोई दाना** (तक) **ज़मीन के अन्धेरे हिस्से में नहीं पड़ता और न कोई तर और सूखी चीज़** (जैसे फल) **गिरती है मगर ये सब खुली किताब** (यानी तक़दीर की किताब) **में** (लिखी) **हैं**(59) **और वो** (अल्लाह तआला) **ऐसा है कि** (अक्सर) **रात में** (सोने के वक़्त) **तुम्हारी रूह** (नफ़सानी) **को** (जिससे जानकारी होती है) **एक हद तक क़ब्ज़ कर लेता है और जो कुछ तुम दिन में करते हो उस को** (बराबर) **जानता है फिर तुम को दिन में जगा कर उठा देता है ताकि** (इसी सोने जागने के सिलसिले से तुम्हारी उम्र की) **तय की हुई मुद्दत पूरी हो जाए, फिर उसी** (अल्लाह) **की तरफ़** (मर कर) **तुम को जाना है फिर तुम को बता देगा जो कुछ तुम** (दुनिया में) **किया करते थे** (ओर उसी के हिसाब से बदला देगा)(60) **और वो ही** (अल्लाह तआला क़ुदरत से) **अपने बन्दों के ऊपर छाए हुए हैं और** (ऐ बन्दों) **तुम पर देखभाल करने वाले** (फ़रिशते) **भेजते** (हैं जो ज़िन्दगी भर तुम्हारे कामों को भी देखते हैं और तुम्हारी जान की भी हिफ़ाज़त करते) **हैं, यहां तक कि जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त आ जाता है तो उस की रूह हमारे भेजे हुए** (फ़रिशते) **क़ब्ज़ कर लेते हैं और ज़रा भी सुस्ती नहीं करते**(61) **फिर सब अपने सच्चे मालिक के पास लाए जाएंगे, अच्छी तरह सुन लो** (उस वक़्त) **फ़ैसला अल्लाह ही का होगा** (और कोई दख़ल न दे सकेगा), **और वो बहुत जल्द हिसाब ले लेगा**(62)।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّ خُفْيَةً ۚ لَئِنْ اَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِيْنَ ﴿٦٣﴾ قُلِ اللّٰهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَ مِنْ كُلِّ كَرْبٍ ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾ قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ يَّبْعَثَ
عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ اَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّ يُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ

كَيۡفَ نُصَرِّفُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَفۡقَهُوۡنَ ۝٦٥ وَكَذَّبَ بِهٖ قَوۡمُكَ وَهُوَ الۡحَقُّ ؕ قُلۡ لَّسۡتُ عَلَيۡكُمۡ بِوَكِيۡلٍ ۝٦٦ لِكُلِّ
نَبَاٍ مُّسۡتَقَرٌّ ۡ وَّسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۝٦٧

आयत न० 63 से 67

**आप** (इन लोगों से) **कहिए कि वो कौन है जो तुम को ज़मीन और समन्दर के अन्धेरों से** (यानी मुसीबतों से) **इस हालत में बचाता है कि तुम उस को** (बचाने के लिए) **पुकारते हो** (कभी) **गिड़गिड़ाते हुए और** (कभी) **चुपके-चुपके,** (और यह कहते हो) **कि** (या अल्लाह) **अगर आप हम को इन** (मुसीबतों) **से** (अब के) **बचा दें तो** (फिर) **हम ज़रूर अहसान मानने वालों में से हो जाएं(63)** (और वो भी कोई दूसरा जवाब न देंगे इसलिए) **आप** (ही) **कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम को इन** (मुसीबतों) **से बचाता है और हर ग़म से** (भी वो ही बचाता है मगर) **तुम** (ऐसे हो कि मुसीबत दूर होने के बाद) **फिर** (उसी तरह) **शिर्क करने लगते हो(64) आप** (यह भी) **कह दीजिए कि वो** (जिस तरह बचाने की ताक़त रखता है इसी तरह) **इस की भी ताक़त रखता है कि तुम पर** (तुम्हारे कुफ़्र व शिर्क की वजह से) **कोई अ़ज़ाब तुम्हारे ऊपर से भेज दे** (जैसे पत्थर या आंधी या तूफ़ानी बारिश) **या तुम्हारे पांव के नीचे** (जो ज़मीन है उस) **से** (दिखादे जैसे ज़लज़ला पानी में डूब जाना) **या कि तुम को** (फूट डाल कर) **गिरोह-गिरोह करके सब को** (आपस में) **लड़ा दे और तुम्हारे एक को दूसरे की लड़ाई** (से मज़ा) **चखा दे,** (ऐ पैग़म्बर) **आप देखिये तो सही हम किस** (किस) **तरह** (तौहीद की) **दलीलों को अलग-अलग तरीक़ों से बयान करते हैं शायद वो** (लोग) **समझ जाएं(65) और** (इन सब बातों को जानने के बावजूद) **आप की क़ौम के लोग उस** (अ़ज़ाब) **को झुटलाते हैं** (और उसके न आने का यक़ीन रखते हैं) **हालांकि वो** (अ़ज़ाब आना) **हक़ है,** (और उस को सुन कर वो यह कह सकते हैं कि कब आएगा तो) **आप** (यह) **कह दीजिए कि मैं तुम पर** (अ़ज़ाब भेजने के लिए) **ज़िम्मेदार नहीं बनाया गया** (हूं कि यह मेरे बस में हो या मैं इस की ख़बर रखता) **हूं(66)** (लेकिन) **हर बात के होने का एक वक़्त** (अल्लाह के यहां) **तय है, और जल्दी ही तुम को पता चल जाएगा** (कि यह अज़ाब आया)(67)।

**नोटः-** एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ला कहते हैं मैं अल्लाह हूं मेरे सिवा कोई माबूद नहीं मैं सब बादशाहों का मालिक और बादशाह हूं सब बादशाहों के दिल मेरे हाथ में हैं जब मेरे बन्दे मेरी ताबेदारी करते हैं तो मैं उन के बादशाहों और हाकिमों के दिलों में हमदर्दी और रहमत डाल देता

हूं और जब मेरे बन्दे मेरी नाफ़रमानी करते हैं तो मैं उन के हाकिमों के दिल उन पर सख़्त कर देता हूं वो उन को हर तरह की तकलीफ़ें देते हैं इसलिए तुम हाकिमों को बुरा कहने में अपना वक़्त बर्बाद मत करो बल्कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ लौ लगाओ और अपने कामों को सुधारो ताकि तुम्हारे सब कामों को ठीक कर दूं। (मिशकात)

وَ اِذَا رَاَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ؕ وَ اِمَّا يُنْسِيَنَّكَ
الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۶۸﴾ وَ مَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّ
لٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿۶۹﴾ وَ ذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّ لَهْوًا وَّ غَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَ ذَكِّرْ بِهٖٓ
اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖۗ لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّ لَا شَفِيْعٌ ۚ وَ اِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ
مِنْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّ عَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ﴿۷۰﴾ قُلْ
اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَ لَا يَضُرُّنَا وَ نُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ
الشَّيٰطِيْنُ فِي الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۪ لَهٗٓ اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ؕ قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَ
اُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۷۱﴾ وَ اَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اتَّقُوْهُ ؕ وَ هُوَ الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ﴿۷۲﴾ وَ هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ وَ يَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۬ؕ قَوْلُهُ الْحَقُّ ؕ وَ لَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ؕ عٰلِمُ
الْغَيْبِ وَ الشَّهَادَةِ ؕ وَ هُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿۷۳﴾

आयत न० 68 से 73

**और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों** (और हुक्मों) **को बुरा कहने में लगे हुए हैं तो उन लोगों** (के पास बैठने) **से अलग हो जाओ जब तक कि वो किसी और बात में न लग जाएं, और अगर शैतान तुम को** (यह बात) **भुला दे तो** (जब याद आए) **याद आने के बाद फिर ऐसे ज़ालिमों के पास मत बैठो** (फ़ौरन खड़े हो जाओ)(68) **और** (अगर कोई दीनी या दुनिया की ज़रूरत ऐसी जगह जाने की हो तो उस का हुक्म यह है कि) **जो लोग** (बुरी बातों से) **बचते हैं उन पर उन** (झुटलाने वालों) **की पूछताछ** (और गुनाह) **का कोई असर न पहुंचेगा** (यानी ज़रूरत से वहां जाने वाले गुनाहगार न होंगे) **व लेकिन उन के ज़िम्मे** (हिम्मत के हिसाब से) **नसीहत कर देना है शायद वो** (बुराई करने वाले) **भी** (ऐसी बातों से) **बचने लगें**(69) **और** (ऐसी

जगह ही नहीं बल्कि) **ऐसे लोगों से बिल्कुल अलग रहो जिन्होंने अपने** (इस) **दीन को** (जिस का मानना उन के ज़िम्मे फ़र्ज़ था यानी इस्लाम को) **खेल तमाशा बना रक्खा है** (कि उस की हंसी उड़ाते हैं) **और दुनिया की ज़िन्दगी ने उन को धोके में डाल रक्खा हे** (कि उसके मज़ों में पड़ कर आख़रत का इनकार करते हैं और इस हंसी उड़ाने का अन्जाम दिखाई नहीं देता) **और** (ऐसे लोगों को) **इस कुरआन से नसीहत भी करते रहो ताकि कोई आदमी अपने** (बुरे) **कामों की वजह से** (अज़ाब में इस तरह) **गरिफ़्तार न हो जाए कि उस को बचाने के लिए न कोई मददगार हो न सिफ़ारिशी, और** (अगर) **वो** (अपनी रिहाई के लिए) **दुनिया भर का बदला देना चाहे तब भी उससे न लिया जाए, ये** (हंसी उड़ाने वाले) **ऐसे ही हैं कि** (नसीहत न मानी और) **अपने** (बुरे) **कामों की वजह से** (अज़ाब में) **गरिफ़्तार हो गये** (जो आख़रत में ऐसे दिखाई देगा कि) **उन के लिए** (बहुत तेज़) **गर्म पानी पीने के लिए होगा और** (इसके अलावा) **दर्दनाक सज़ा होगी अपने कुफ़्र की वजह से(70) आप** (ऐ पैग़म्बर) **इन** (मुशरिकों) **से कह दीजिए कि क्या हम अल्लाह को छोड़ कर ऐसी चीज़ की इबादत करें कि न वो** (उस की इबादत करने की सूरत में) **हम को नफ़ा पहुंचा सके और न वो** (उस की इबादत न करने की सूरत में) **हम को नुक़सान पहुंचा सके और क्या** (अल्लाह न करे) **हम** (इस्लाम से) **उल्टे फिर जाएं जब कि हम को अल्लाह तआ़ला ने** (सीधे रास्ते की) **हिदायत कर दी है** (या उस की तरह हो जाएं) **जैसे कोई आदमी हो कि उस को शैतानों ने कहीं जंगल में** (बहका कर राह से) **बेराह कर दिया हो और वो भटकता फिरता हो,** (और) **उस के कुछ साथी भी हों कि वो उस को ठीक रास्ते की तरफ़** (पुकार-पुकार कर) **बुला रहे हों कि** (इधर) **हमारे पास आ** (मगर वो न उन की बात समझता है न आता है क्या हम राह दिखाने वाले पैग़म्बर को छोड़ कर तुम्हारी मर्ज़ी पर चल कर ऐसे ही हो जाएं)**, आप** (इन से) **कह दीजिए कि सच्ची बात यह है कि सीधा रास्ता वो अल्लाह ही का** (बताया हुआ) **रास्ता है** (और वो इस्लाम है बस उस का छोड़ना गुमराह होना है, फिर हम कब छोड़ सकते हैं)**, और** (आप कह दीजिए हम शिर्क कैसे कर सकते हैं) **हम को** (तो) **यह हुक्म हुआ है कि हम पूरे ताबेदार हो जाएं सारे जहानों के रब के** (यानी इस्लाम के हुक्मों की दिल से पाबन्दी करें)(71) **और यह** (हुक्म हुआ है) **कि नमाज़ की पाबन्दी करो और उस से** (यानी अल्लाह की नाराज़ी) **से डरो, और वो ही** (अल्लाह) **है जिस के पास तुम सब** (क़ियामत के दिन क़ब्रों से निकाल कर हिसाब के लिए) **जमा किये जाओगे** (वहां मुशरिकों को अपने शिर्क का अन्जाम भुगतना होगा)(72) **और वो ही** (अल्लाह) **जिस ने आसमानों को और ज़मीन को बड़े नफ़े वाला बनाया** (जिस में एक बड़ा नफ़ा

यह हे कि यह पैदा करने वाले के वजूद और तौहीद की एक दलील है), **और** (यह दोबारा पैदा करना उस के लिए इतना आसान है कि) **जिस वक़्त अल्लाह तआ़ला** (क़ियामत से) **इतना कह देगा कि तू हो जा बस वो हो जाएगी, उस का** (यह) **कहना बरहक़ है** (यानी असर वाला है ख़ाली नहीं जाता), **और** (क़ियामत के दिन) **जब कि सूर में** (अल्लाह के हुक्म से दूसरी बार फ़रिशते की) **फूंक मारी जाएगी, सारी हुकूमत** (असल में भी देखने में भी) **ख़ास उसी** (अल्लाह) **की होगी** (और उस दिन अल्लाह को एक मानने वालो और न मानने वालों के बीच फ़ैसला हो जाएगा), **वो** (अल्लाह) **जानने वाला है छुपी चीज़ों का और खुली चीज़ों का** (बस मुशरिकों की करतूतों का भी उस को पता है), **और वो ही है बड़ी हिकमत वाला** (इसलिए ठीक-ठीक बदला हर एक को देगा और वो ही है) **पूरी ख़बर रखने वाला** (इसलिए कोई बात उससे छुपाई नहीं जा सकती)(73)

नोटः- एक हदीस में है कि मेरी उम्मत से ख़ता और भूल का और उस काम का गुनाह मुआफ़ कर दिया गया है जो किसी ने ज़बरदस्ती उससे करा दिया हो। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

وَ اِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَ قَوْمَكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿۷۴﴾ وَ كَذٰلِكَ نُرِيْٓ
اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَ لِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ﴿۷۵﴾ فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ هٰذَا
رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ ﴿۷۶﴾ فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ
يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ﴿۷۷﴾ فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ
قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ﴿۷۸﴾ اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ مَآ اَنَا مِنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۷۹﴾ وَ حَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ؕ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي اللّٰهِ وَ قَدْ هَدٰىنِ ؕ وَ لَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ
يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ؕ وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿۸۰﴾ وَ كَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَ لَا تَخَافُوْنَ
اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ؕ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿۸۱﴾

आयत न० 74 से 81

**और** (वो वक़्त भी याद कीजिए) **जब इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **ने अपने बाप आज़र से कहा कि क्या आप बुतों को ख़ुदा बनाए बैठे हैं, बेशक मैं आप को और आप की सारी क़ौम को**

(जो इस ऐतक़ाद में आप के साझी हैं) **खुली ग़लती में देख रहा हूं(74) और हम ने ऐसे ही इब्राहीम** (अ़लैहिस्सलाम) **को आसमानों और ज़मीन की चीज़ें दिखाईं ताकि वो** (पैदा करने वाले को) **अच्छी तरह जान लें और उन का यक़ीन पक्का हो जाए(75) फिर** (उसी दिन या किसी और दिन) **जब उन** (सब) **पर रात का अन्धेरा छा गया तो उन्होंने एक सितारा देखा** (कि चमक रहा है), **आप ने** (अपनी क़ौम से) **कहा कि** (तुम्हारी समझ से) **यह मेरा** (और तुम्हारा) **रब** (और हमारे काम बनाने वाला) **है** (बहुत अच्छा अब थोड़ी देर में असलीयत पता चल जाएगी), **तो जब वो छुप गया तो आपने कहा कि मैं छुप जाने वालों से मुहब्बत नहीं रखता** (यानी मैं उसे रब नहीं समझता)(76) **फिर** (उसी रात में या किसी दूसरी रात में) **जब चान्द को देखा** (कि) **चमकता हुआ** (निकला है) **तो** (पहले ही की तरह) **कहा कि** (तुम्हारी समझ से) **यह मेरा** (और तुम्हारा) **रब है** (बहुत अच्छा अब थोड़ी देर में उस की हालत भी देखना), **तो जब वो भी छुप गया तो आप ने कहा कि अगर मुझ को मेरा** (सच्चा) **रब रास्ता न दिखाता रहे तो मैं भी** (तुम्हारी तरह) **गुमराह लोगों में शामिल हो जाऊं(77) फिर** (सुबह को) **जब उन्होंने सूरज देखा** (बड़ा दमकता) **चमकता हुआ** (निकला है) **तो** (पहली दो बार की तरह फिर) **कहा कि** (तुम्हारी समझ से) **यह मेरा** (और तुम्हारा) **रब है** (और) **यह तो सब** (बताए सितारों) **में बड़ा है,** (बस जब शाम हुई तो वो भी छुप गया) **तो जब वो छुप गया तो आपने कहा कि ऐ मेरी क़ौम बेशक मैं तुम्हारे शिर्क से नफ़रत करता हूं(78) मैं** (सब तरीक़ों से) **अलग हो कर अपना मुंह** (दिल से) **उस** (हस्ती) **की तरफ़ करता हूं जिस ने आसमानों को और ज़मीन को पैदा किया और मैं** (तुम्हारी तरह) **शिर्क करने वालों में से नहीं हूं** (न ऐतक़ाद से न ज़बान से न अ़मल से)(79) **और उन से उन की क़ौम ने** (बेतुकी) **बहस करना शुरू की** (जैसे यह कि हमारे बाप दादा इन की इबादत करते आए हैं और डराना चाहा कि इन के इनकार पर कोई मुसीबत आजाएगी), **आपने** (पहली बात के जवाब में तो यह) **कहा कि क्या तुम अल्लाह** (के एक होने) **के बारे में मुझ से** (नाहक़्) **बहस करते हो जब कि उस ने मुझ को** (दलील करने का सही) **तरीक़ा बता दिया है** (जिस को मैं तुम्हारे सामने पेश कर चुका हूं), **और** (दूसरी बात के जवाब में यह कहा कि) **मैं उन चीज़ों से जिन को तुम अल्लाह तआ़ला का** (इबादत में) **साझी बनाए हो नहीं डरता** (कि वो मुझ को कोई नुक़सान पहुंचा सकें क्योंकि यह उन के बस में है ही नही) **हां लेकिन अगर मेरा रब ही कुछ** (नुक़सान पहुंचाना) **चाहे** (तो वो दूसरी बात है), **मेरा रब हर चीज़ को अपने इल्म के घेरे में लिए हुए है** (और ये झूटे खुदा न ताक़त रखते हैं न इल्म), **क्या तुम** (सुनते हो और) **फिर** (भी) **सोचते नहीं(80) और मैं**

**उन चीज़ों से कैसे डरूं जिन को तुम ने** (इबादत में अल्लाह तआ़ला का) **साझी बनाया है जब कि तुम इस बात** (के वबाल) **से नहीं डरते कि तुम ने अल्लाह तआ़ला के साथ ऐसी चीज़ों को साझी ठहराया है जिन** (के ख़ुदा होने) **पर अल्लाह तआ़ला ने तुम पर कोई दलील नहीं उतारी** (मतलब यह कि डरना चाहिए तुम को फिर उल्टा मुझ को डराते हो), **सो** (इन्साफ़ से सोचकर बताओ) **इन दो** (बताए) **गिरोहों में से** (यानी मुशरिकों व मुसलमानों में से) **अमन** (सलामती यानी न डरने) **का कौन ज़्यादा हक़दार है** (और डर भी असली यानी आख़िरत का) **अगर तुम कुछ ख़बर रखते हो**(81)।

**नोटः-** इस मुनाज़रे में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने कैसी हिकमत के साथ नसीहत की है।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَ هُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿۸۲﴾ؑ وَ تِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ
اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ اِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿۸۳﴾ وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَ يَعْقُوْبَ ؕ كُلًّا
هَدَيْنَا ۚ وَ نُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ وَ اَيُّوْبَ وَ يُوْسُفَ وَ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ؕ وَ كَذٰلِكَ
نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۸۴﴾ۙ وَ زَكَرِيَّا وَ يَحْيٰى وَ عِيْسٰى وَ اِلْيَاسَ ؕ كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۸۵﴾ۙ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ الْيَسَعَ وَ يُوْنُسَ وَ
لُوْطًا ؕ وَ كُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿۸۶﴾ۙ وَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَ ذُرِّيّٰتِهِمْ وَ اِخْوَانِهِمْ ۚ وَ اجْتَبَيْنٰهُمْ وَ هَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ﴿۸۷﴾ ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ لَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۸۸﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَ كَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا
بِكٰفِرِيْنَ ﴿۸۹﴾

आयत न० 82 से 89

**जो लोग** (अल्लाह पर) **ईमान रखते हैं और अपने** (इस) **ईमान के साथ शिर्क नहीं मिलाते ऐसों ही के लिए** (क़ियामत में) **अमन** (सलामती) **है और वो ही** (दुनिया में सीधे) **रास्ते पर चल रहे हैं**(82) **और यह** (दलील जो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तौहीद यानी अल्लाह के एक होने पर पेश की थी) **हमारी** (दी हुई) **दलील थी वो हम ने इब्राहीम** (अलैहिस्सलाम) **को उन की क़ौम के मुक़ाबिले में दी** (थी जब हमारी दी हुई थी तो बड़े दर्जे की) **थी,** (और इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही क्या) **हम** (तो) **जिस को चाहते हैं रूतबे में बढ़ा देते हैं** (बस सब नबियों को ये ऊंचे दर्जे दिये), **बेशक आप का रब बड़े इल्म वाला बड़ी हिकमत वाला** (है कि हर एक को उस के हिसाब से

कमाल देता) **है(83) और हमने उन** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **को** (एक बेटा) **इसहाक़ दिया और** (एक पोता) **याकूब** (दिया और दूसरी औलाद भी, और) **हर एक को हम ने** (सच्चे दीन की) **हिदायत की, और** (इब्राहीम से) **पहले ज़माने में हम ने नूह** (अलैहिस्सलाम) **को** (भी कि इब्राहीम अलैहिस्सलाम जिन की औलाद में से हैं सच्चे दीन की) **हिदायत की और उन** (इब्राहीम अलैहिस्सलाम) **की औलाद में से** (आख़ीर तक जितने बताए गये हैं सब को सच्चे दीन की हिदायत की यानी) **दाऊद** (अलैहिस्सलाम) **को और** (उन के बेटे) **सुलैमान** (अलैहिस्सलाम) **को और अय्यूब** (अलैहिस्सलाम) **को और यूसुफ़** (अलैहिस्सलाम) **को और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को और हारून** (अलैहिस्सलाम) **को** (सच्चे दीन की हिदायत की), **और** (जब ये हिदायत पर चले तो हम ने उन को अच्छा बदला दिया) **इसी तरह** (हमारी आदत है कि) **हम नेक काम करने वालों को** (अच्छा) **बदला दिया करते हैं(84) और ऐसे ही** (हम ने सच्चे दीन की हिदायत की) **ज़िकरिया** (अलैहिस्सलाम) **को और** (उनके बेटे) **याहया** (अलैहिस्सलाम) **को और ईसा** (अ़लैहिस्सलाम) **को और इलयास** (अ़लैहिस्सलाम) **को,** (और ये) **सब नेक लोगों में से थे(85) और ऐसे ही** (हम ने सच्चे दीन की हिदायत की) **इस्माईल** (अलैहिस्सलाम) **को और यसा** (अलैहिस्सलाम) **को और यूनुस** (अलैहिस्सलाम) **और लूत** (अलैहिस्सलाम) **को, और** (उनमें से) **हर एक को** (उन के ज़मानों के) **सारे जहान वालों पर** (पैग़म्बरी से) **बड़ाई दी(86) और ऐसे ही इन** (हज़रात) **के कुछ बाप दादों को और कुछ औलाद को और कुछ भाइयों को** (सच्चे दीन की हम ने हिदायत की) **और हम ने उन** (सब) **को सीधे रास्ते** (यानी सच्चे दीन) **की हिदायत की(87)** (और वो दीन जिस की इन सब को) **अल्लाह की** (तरफ़ से) **हिदायत** (हुई) **वो ये ही** (दीन) **है अपने बन्दों में जिस को चाहे इस की हिदायत करता रहता है, और** (शिर्क ऐसी बुरी चीज़ है कि और तो क्या) **मान लो अगर ये** (पैग़म्बर हज़रात) **भी** (अल्लाह की पनाह) **शिर्क करते तो जो कुछ ये** (नेक) **काम किया करते थे सब बर्बाद हो जाते(88) ये** (जितने पैग़म्बर बयान हुए) **हम ने उन को** (आसमानी किताब) **और हिकमत** (का इल्म) **और पैग़म्बरी दी थी** (तो पैग़म्बरी अचम्भे की बात नहीं जो ये काफ़िर लोग आप का इनकार कर रहे हैं), **तो अगर** (इस पर भी) **ये लोग** (आप की) **पैग़म्बरी का इनकार करें तो** (आप ग़म न कीजिए क्योंकि) **हम ने उसके** (मानने के) **लिए ऐसे बहुत लोग ठहरा दिये हैं** (यानी मुहाजिरीन व अन्सार) **जो इस का इनकार नहीं करते(89)।**

**नोटः-** यहां यह भी मालूम हुआ कि शिर्क सिर्फ़ ये ही नहीं कि खुले तौर पर मुशरिक या बुत परस्त हो

जाए बल्कि वो आदमी भी मुशरिक है जो भले ही किसी बुत की पूजा पाट नहीं करता और इस्लाम का कलिमा पढ़ता है मगर किसी फ़रिशते या रसूल या किसी अल्लाह के वली को अल्लाह की ख़ास ख़ास ख़ूबियों का साझी ठहराए इसमें उन आम लोगों के लिए सख़्त ताकीद है जो अल्लाह के वलियों और उन के मज़ारों को काम बनाने वाला समझते हैं और उन से अपनी ज़रूरतें मांगते हैं।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ اقْتَدِهْ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ۝۹۰ وَ مَا
قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَیْءٍ ؕ قُلْ مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِیْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى
نُوْرًا وَّ هُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَ تُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ وَ عُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَ لَآ
اٰبَآؤُكُمْ ؕ قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِیْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝۹۱ وَ هٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِیْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَ
لِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى وَ مَنْ حَوْلَهَا ؕ وَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝۹۲ وَ
مَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ قَالَ اُوْحِیَ اِلَیَّ وَ لَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَیْءٌ وَّ مَنْ قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ
اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ تَرٰٓى اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِیْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَ كُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۹۳ وَ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا
فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّ تَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَ مَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ
اَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَ ضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝۹۴

आयत न० 90 से 94

**ये हज़रात** (जिन का ऊपर ज़िक्र हुआ) **ऐसे थे जिन को अल्लाह तआला ने** (मुख़ालिफ़ों के बरताव पर सब्र की) **हिदायत की थी इसलिए** (इस बारे में) **आप भी उन्हीं के रास्ते पर चलिए** (यानी सब्र से काम लीजिए)**, आप** (उन से यह भी) **कह दीजिए कि मैं तुम से इस** (कुरआन की तबलीग़) **पर कुछ बदला नहीं चाहता** (जिस के मिलने से नफ़ा और न मिलने से नुक़सान हो बिना लालच नसीहत करता हूं)**, यह** (कुरआन) **तो सारे दुनिया जहान** (के लोगों) **के लिए एक नसीहत** (है जिस को मानने से तुम्हारा ही नफ़ा है और न मानने से तुम्हारा ही नुक़सान) **है(90) और इन** (इनकार करने वाले) **लोगों ने अल्लाह तआला की जैसी क़द्र पहचानना वाजिब थी वैसी क़द्र**

**नहीं पहचानी जब कि** (मुंह उठा कर) **यह कह दिया कि अल्लाह तआ़ला ने किसी इन्सान पर कोई चीज़** (यानी कोई किताब) **नहीं उतारी, आप** (उन से) **यह कहिए कि** (यह तो बताओ कि) **वो किताब किस ने उतारी है जिस को मूसा** (अ़लैहिस्सलाम) **लाए थे** (यानी तौरेत जिस को तुम भी मानते हो) **जो नूर** (की तरह रौशन) **है और** (जिन की हिदायत के लिए वो आई थी उन) **लोगों के लिए हिदायत है जिस को तुम ने** (अपने मतलब के लिए) **अलग-अलग हिस्सों में रख छोड़ा है जिन** (में अपने मतलब की बात पाते हो उस) **को खोल देते हो और बहुत सी बातों को** (जो अपने मतलब के ख़िलाफ़ हैं) **छुपा लेते हो, और** (इस किताब से) **तुम को बहुत सी ऐसी बातें सिखाई गई जिन को** (किताब मिलने से पहले) **न तुम** (यानी उस वक़्त मौजूद तुम्हारी क़ौम के लोग) **जानते थे और न तुम्हारे** (नज़दीकी) **बड़े** (जानते थे), **आप** (ख़ुद ही) **कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला ने उस** (किताब) **को उतारा है फिर** (यह जवाब सुना कर) **उन को उन के बेहूदा खेल में लगा रहने दीजिए** (यानी आप की ज़िम्मेदारी पूरी हुई, न मानें तो आप फ़िक्र में न पड़ें हम आप ही समझ लेंगे)(91) **और** (जिस तरह तौरेत हमारी उतारी हुई किताब थी इसी तरह) **यह** (क़ुरआन) **भी** (जिस को ये झुटलाना चाहते हैं) **ऐसी ही किताब है जिस को हम ने** (आप पर) **उतारा है जो बड़ी** (ख़ैर व) **बरकत वाली है** (जिस पर ईमान लाना और हुक्मों पर चलना बड़ी कामयाबी है और) **अपने से पहले** (उतारी गई) **किताबों** (की अल्लाह की तरफ़ से उतरी होने) **की तसदीक़ करने वाली** (है सो हम ने इस क़ुरआन को लोगों की भलाई के लिए और आसमानी किताबों की तस्दीक़ के लिए उतारा) **है और** (इसलिए उतारा कि) **ताकि आप** (इस के वास्ते से ख़ास कर) **मक्के वालों को और आस पास वालों को** (अल्लाह के अज़ाब से डराएं जो इसके न मानने पर होगा, और आ़म लोगों को भी) **डराएं, और** (आप के समझाने से चाहे सब ईमान न लाएं लेकिन) **जो लोग आख़िरत का** (पूरा) **यक़ीन रखते हैं ऐसे लोग** (तो) **इस** (क़ुरआन) **पर ईमान ले** (ही) **आते हैं और** (ईमान व ऐतक़ाद के साथ उस के हुक्मों के भी पाबन्द होते हैं बस) **वो अपनी नमाज़ की भी पाबन्दी रखते हैं**(92) **और उस आदमी से ज़्यादा कौन ज़ालिम होगा जो अल्लह पर झूट बान्धे** (और पैग़म्बरी का या किसी पैग़म्बर का इनकार करे) **या यह कहे कि मुझ पर वही आती है जब कि उस के पास किसी बात की भी वही नहीं आई** (जैसे पैग़म्बरी का दावा करने वाला मुसैलिमा) **और** (इसी तरह उससे भी ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा) **जो आदमी यह कहे कि जैसा कलाम अल्लाह तआ़ला ने** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर) **उतारा है उसी तरह का मैं भी ला**(कर दिखा)**ता हूं** (जैसा नज़र या अब्दुल्लाह कहता था मतलब यह कि ये सब लोग बड़े ज़ालिम हैं), **और**

**अगर आप** (उन ज़ालिमों को) **उस वक़्त देखें** (तो बड़ी डरावनी हालत दिखाई दे) **जब कि ये ज़ालिम लोग मौत की** (रूहानी) **सख़्तियों में** (जकड़े) **होंगे और** (मौत के) **फ़रिशते** (उन की रूह निकालने के लिए उन की तरफ़) **अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे,** (और सख़्ती के लिए यह कहते जाते होंगे कि) **हां** (जल्दी) **अपनी जानें निकालो** (कहां बचाते फिरते थे, देखो) **आज** (मरने के साथ ही) **तुम को रूसवाई भरी सज़ा दी जाएगी इस वजह से कि तुम अल्लाह तआ़ला के ज़िम्मे झूटी** (झूटी) **बातें बकते थे और तुम अल्लाह तआ़ला की आयतों** (को मानने) **से** (जो कि हिदायत का सामान थीं) **घमन्ड करते थे(93) और** (जब क़ियामत का दिन होगा तो अल्लाह तआ़ला कहेंगे) **तुम हमारे पास** (बे यारो मददगार) **अकेले अकेले** (होकर) **आ गये जैसे हम ने पहली बार** (दुनिया में) **तुम को पैदा किया था** (कि न बदन पर कपड़ा न पांव में जूता) **और जो कुछ हम ने तुम को** (दुनिया में साज़ो सामान) **दिया था** (जिस पर तुम भूले बैठे थे) **उस को अपने पीछे ही छोड़ आए** (साथ कुछ न ला सके मतलब यह कि माल व दौलत के भरोसे पर न रहना सब यहां ही रह जाएगा), **और** (तुम में कुछ को अपने झूटे ख़ुदाओं की सिफ़ारिश का भरोसा था सो) **हम तो तुम्हारे साथ** (इस वक़्त) **तुम्हारे उन सिफ़ारिश करने वालों को नहीं देखते** (जिससे साबित हुआ कि असलीयत में भी तुम्हारे साथ नहीं हैं) **जिन के बारे में तुम दावा रखते थे कि वो तुम्हारे कामों में** (हमारे) **साझी हैं** (कि तुम्हारा इबादत का जो तरीक़ा हमारे साथ होता वो ही उन के साथ होता था), **सचमुच तुम्हारे** (और उनके) **आपस में तो रिशता टूट गया** (कि आज तुम उन से वो तुम से नफ़रत करते हैं सिफ़ारिश क्या करेंगे) **और वो तुम्हारे दावे सब जाते रहे(94)।**

إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَ النَّوٰى ؕ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَ مُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَأَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾
فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ۚ وَ جَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا وَّ الشَّمْسَ وَ الْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾ وَ هُوَ الَّذِىْ
جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِىْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَ الْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾ وَ هُوَ الَّذِىْٓ
اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّ مُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

आयत न० 95 से 98

**बेशक अल्लाह तआ़ला फ़ाड़ने वाले हैं दाने को और गुठली को** (यानी ज़मीन में दबाने के बाद जो दाना या गुठली फूटती है जिससे हरा भरा पौधा तैयार हो जाता है यह अल्लाह ही का काम है), **वो जानदार** (चीज़) **को बेजान** (चीज़) **से निकाल लाता है** (जैसे अन्डे से मुर्ग़ी पैदा होती है)

**और वो बेजान** (चीज़) **को जानदार** (चीज़) **से निकालने वाला** (है जैसे मुर्ग़ी से अन्डा निकलता) **है, अल्लाह यह है** (जिस की ऐसी कुदरत है) **तो तुम** (उस की इबादत को छोड़ कर) **कहां** (अल्लाह के सिवा दूसरे की इबादत की तरफ़) **उल्टे चले जा रहे हो(95) वो** (अल्लाह तआला) **सुबह का** (रात में से) **निकालने वाला** (है यानी रात ख़त्म हो जाती है और सुबह का उजाला दिखाई देता) **है, और उसने रात को आराम की चीज़ बनाई है** (कि सब थके थकाए सोकर आराम पाते हैं) **और सूरज और चान्द** (की रफ़्तार) **को हिसाब से रक्खा** (है जिससे वक़्त का पता लगाने में आसानी होती) **है, यह** (अन्दाज़ा) **रक्खा हुआ है उस का जो बड़ी कुदरत वाला** (और) **बड़े इल्म वाला है(96) और वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिस ने तुम्हारे** (फ़ाइदे के) **लिए सितारों को पैदा किया ताकि तुम उन के वास्ते से** (रात के) **अन्धेरों में जंगल में भी और समन्दर में भी रास्ता पता कर सको, बेशक हम ने** (ये तौहीद व नेमतों के) **सबूत अच्छी तरह खोल-खोल कर बयान कर दिये हैं** (मगर नफ़ा) **उन** (ही) **लोगों के लिए** (होगा) **जो** (भले बुरे की कुछ) **ख़बर रखते** (हैं क्योंकि ऐसे ही लोग समझ बूझ से काम लेते) **हैं(97) और वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिस ने तुम** (सब) **को** (असल में) **एक इन्सान** (आदम अलैहिस्सलाम) **से पैदा किया फिर** (जिससे नस्ल का सिलसिला चला आ रहा है कि तुम में से हर आदमी के लिए) **एक जगह ज़्यादा रहने की है** (यानी मां का पेट) **और एक जगह कुछ दिन रहने की है** (यानी बाप की पीठ)**, बेशक हम ने** (ये) **सबूत** (भी तौहीद व नेमतों के) **अच्छी तरह खोल-खोल कर बयान कर दिये हैं** (मगर इन का नफ़ा भी) **उन** (ही) **लोगों के लिए** (होगा) **जो समझ बूझ रखते हैं(98)।**

وَ هُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ وَ
مِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِیَةٌ وَّ جَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّ الزَّیْتُوْنَ وَ الرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّ غَیْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ اُنْظُرُوْٓا
اِلٰی ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَ یَنْعِهٖ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكُمْ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۹۹﴾ وَ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَ خَلَقَهُمْ وَ
خَرَقُوْا لَهٗ بَنِیْنَ وَ بَنٰتٍۭ بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَ تَعٰلٰی عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿۱۰۰﴾ بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ اَنّٰی یَكُوْنُ لَهٗ
وَلَدٌ وَّ لَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ ۚ وَ هُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿۱۰۱﴾ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَ هُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿۱۰۲﴾

आयत न० 99 से 102

**और वो** (अल्लाह) **ऐसा है जिसने आसमान** (की तरफ़) **से पानी बरसाया, फिर हमने उस** (एक ही पानी) **से हर क़िस्म** (के रंग बरंग) **के पेड़ पोधों को** (ज़मीन से) **निकाला** (एक ही पानी एक ही मिट्टी से इतनी अलग-अलग क़िस्म के पेड़ पौधे जिन के रंग, बू, ज़ाइक़ा व फ़ाइदा अलग-अलग हैं कुदरत का कैसा करिशमा है) **फिर हम ने उस** (कोंपल) **से** (जो पहले पहल ज़मीन से निकलती है) **हरी टहनी निकाली कि उस** (टहनी) **से हम एक पर एक चढ़े हुए दाने निकालते हैं** (यह तो ग़ल्लों की हालत है)**, और खुजूर के पेड़ों से फल के गुच्छे** (निकालते हैं) **जो** (मारे बोझ के) **नीचे को लटके जाते हैं और** (उसी पानी से हम ने) **अंगूरों के बाग़** (पैदा किये) **और ज़ैतून व अनार** (के पेड़ पैदा किये) **जो कि** (कुछ सूरत व रंग में) **एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और** (कुछ) **एक दूसरे से मिलते जुलते नहीं होते,** (ज़रा) **हर एक के फल को तो देखो जब वो फलता है** (कि उस वक़्त बिल्कुल कच्चा बे मज़ा होता है) **और** (फिर) **उस के पकने को देखो** (कि उस वक़्त कैसा अच्छा हो जाता है)**, इन** (बातों) **में** (भी तौहीद के) **सबूत** (मौजूद) **हैं** (मगर) **उन** (ही) **लोगों के लिए** (हैं) **जो ईमान** (लाने की फ़िक्र) **रखते हैं(99) और** (मुशरिक) **लोगों ने** (अपने ऐतक़ाद में) **शैतानों को अल्लाह का साझी बना रक्खा है** (कि उन के बहकाने से शिर्क करते हैं) **जब कि उन लोगों को अल्लाह** (ही) **ने पैदा किया है** (जिस को ये भी मानते हैं तो जब पैदा करने वाला कोई और नहीं तो इबादत भी किसी और की नहीं की जानी चाहिए) **और इन** (मुशरिकों में से कुछ) **लोगों ने अल्लाह के लिए बेटे और बेटियां** (अपने ऐतक़ाद में) **सिर्फ़ बिना दलील घड़ रक्खी हैं** (जैसे ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को और कुछ यहूदी हज़रत उज़ैज अलैहिस्सलाम को ख़ुदा का बेटा और अरब के मुशरिक फ़रिशतों को अल्लाह की बेटियां कहते थे)**, वो पाक और बहुत ऊंचा है उन बातों से जिन को ये लोग** (अल्लाह की शान में) **कहते हैं** (यानी यह कि उस का कोई साझी हो या उस के कोई औलाद हो)**(100) वो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला** (है और दूसरा कोई पैदा करने वाला नहीं) **है,** (और) **अल्लाह के औलाद कहां हो सकती है जबकि उस के कोई बीवी तो है नहीं, और अल्लाह तआ़ला ने** (तो) **हर चीज़ को पैदा किया, और वो हर चीज़ को अच्छी तरह जानता है(101) यह है अल्लाह तुम्हारा रब उस के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, हर चीज़ का पैदा करने वाला तो तुम लोग उस** (ही) **की इबादत करो, और** (फिर यह कि) **वो** (ही) **हर चीज़ का कारसाज़** (है दूसरा कोई कारसाज़ यानी काम बनाने वाला नहीं बस उस की इबादत करोगे तो वो तुम को असली नफ़ा पहुंचाएगा

और दूसरा कोई क्या दे सकता) **है**(102)।

لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۡ وَهُوَ يُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ۝ قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ اَبْصَرَ
فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَآ اَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ ۝ وَ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَ لِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَ لِنُبَيِّنَهٗ
لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝ اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝ وَ لَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَآ اَشْرَكُوْا ؕ وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝

आयत न० 103 से 107

**उस को तो किसी की निगाह नहीं पा सकती, और वो सब निगाहों को पा लेता** (है यानी अल्लाह तआ़ला की ज़ात को सब की निगाहें मिल कर भी पूरी तरह नहीं देख सकती और वो हर घड़ी सब को हर हाल में देखता) **है, और** (इस बात से साबित हुआ कि) **वो ही बड़ा बारीक नज़र वाला ख़बरदार** (है और कोई दूसरा नहीं और यह वो कमाल है इल्म का जिसमें अल्लाह तआ़ला अकेला) **है**(103) (आप इन लोगों से कह दीजिए कि) **बेशक तुम्हारे पास सच्चाई जानने के सामान** (यानी तौहीद व पैग़म्बरी के हक़ होने के सबूत) **पहुंच चुके हैं तुम्हारे रब की तरफ़ से, तो जो आदमी** (इन से सच्चाई को) **देख लेगा वो अपना फ़ाइदा करेगा, और जो आदमी अन्धा** (बना) **रहेगा वो अपना ही नुक़सान करेगा, और मैं तुम्हारा** (यानी तुम्हारे कामों का) **ज़िम्मेदार नहीं हूं** (यानी तुम्हें ग़लती न करने दूं यह मेरे ज़िम्मे नहीं है मेरा काम सिर्फ़ हुक्मों का पहुंचा देना है)(104) **और** (देखिए) **हम इस तरह दलीलों को अलग-अलग तरीक़ों से बयान करते हैं ताकि आप सब को पहुंचा दें और ताकि** (ये इनकार करने वाले हटधर्मी से) **यह कहें कि आपने किसी से** (इन बातों को) **पढ़ लिया है** (ताकि इस बात से उन पर जुर्म साबित हो जाए) **और ताकि हम इस** (क़ुरआन की आयतों) **को समझदारों के लिए अच्छी तरह खोल कर बयान कर दें**(105) (ऐ पैग़म्बर) **आप** (यह न देखिए कि कौन मानता है और कौन नहीं मानता) **ख़ुद राह पर चलते रहिए जिस** (पर चलने) **की वही आप के रब की तरफ़ से आप के पास आई है,** (और इस राह में बड़ी चीज़ यह ऐतक़ाद है कि) **अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लाइक़ नहीं, और मुशरिकों की परवाह न कीजिए** (कि अफ़सोस उन्होंने क्यों नहीं माना)(106) **और** (वजह इस की यह है कि) **अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो ये लोग शिर्क न करते** (लेकिन इन लोगों की बुराइयों से अल्लाह

तआ़ला ने चाहा कि उन को सज़ा दें इसलिए ऐसा ही सामान जमा कर दिया फिर उन को आप क्या मुसलमान बना सकते हैं), **और** (आप इस फ़िक्र में पड़े ही क्यों) **हम ने आप को उन** (के कामों) **की देख भाल करने वाला नहीं बनाया और न आप** (उन कामों पर अज़ाब देने के हमारी तरफ़ से) **ज़िम्मेदार** (हैं बस जब आप से न उन के गुनाहों की पूछ ताछ है और न उन की सज़ा का हुक्म फिर आप क्यों परीशान) **हैं**(107)।

**नोटः**- एक हदीस में है कि "जब जन्नती जन्नत में चले जाएंगे तो अल्लाह तआ़ला उन से कहेंगे कि जो नेमतें जन्नत में मिल चुकी है उन से ज़्यादा और कुछ चाहिए तो बताओ हम वो भी दे देंगे ये लोग कहेंगें या अल्लाह आप ने हमें दोज़ख़ से बचाया जन्नत में पहुंचाया इससे ज़्यादा हमें और क्या चाहिए उस वक़्त पर्दा बीच से उठा दिया जाएगा और सब को अल्लाह तआ़ला की ज़ियारत होगी और जन्नत की सारी नेमतों से बढ़ कर ये नेमत होगी"। (मुस्लिम)
मगर वहां जो ज़ियारत होगी वो ऐसी तरह होगी कि नज़र उन की ज़ात को पूरी तरह न देख सकेगी और दुनिया में इन्सान और उस की नज़र में इतनी ताक़त नहीं जो उनके दीदार को सहन कर सके इसलिए दुनिया में ज़ियारत नहीं हो सकती जैसा कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम का ताब न लाना फिर और किसी इन्सान या जिन्नात की तो क्या मजाल है।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًاۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۪ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٠٨ وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ
لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَاۤ اِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠٩ وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَ
اَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖۤ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١٠

आयत न० 108 से 110

**और बुरा मत कहो उन** (झूटे खुदाओं) **को जिन की ये** (मुशरिक) **लोग अल्लाह** (की तौहीद) **को छोड़ कर इबादत करते हैं क्योंकि** (तुम्हारे ऐसा करने से) **फिर वो अल्लाह तआ़ला की शान में बेअदबी करेंगे बेसमझी से,** (ओर उन को उसी दम सज़ा न मिलने की वजह यह है कि) **हम ने** (दुनिया में तो) **इसी तरह** (जैसा हो रहा है) **हर गिरोह को उन का काम** (भला हो या बुरा हो) **पसन्दीदा बना रक्खा है** (यानी ऐसे सामान जमा हो जाते हैं कि हर एक को अपना तरीक़ा पसन्द है बस इससे पता चला कि यह दुनिया इम्तिहान है इसमें सज़ा ज़रूरी नहीं), **फिर** (अपने

वक़्त पर) **अपने रब ही के पास इन** (सब) **को जाना है तो** (उस वक़्त) **वो उन को बता देगा जो कुछ भी वो** (दुनिया में) **किया करते थे** (और मुजरिमों को सज़ा देगा)(108) **और इन** (इनकार करने वाले) **लोगों ने क़समों में बड़ा ज़ोर लगा कर अल्लाह की क़सम खाई कि अगर उन के** (यानी हमारे) **पास** (उन की मांगी हुई निशानियों में से) **कोई निशानी आजाए तो वो** (यानी हम) **ज़रूर ही उस** (निशानी) **पर ईमान ले आएंगे** (यानी मोजिज़ा दिखाने वाले की पैग़म्बरी को मान लेंगे), **आप** (जवाब में) **कह दीजिए कि सारी निशानियां अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में हैं** (वो जब ठीक समझें दिखा सकते हैं) **और** (चूंकि मुसलमान सोचते थे कि क्या ही अच्छा हो अगर यह निशानी दिखा दी जाए शायद वो ईमान ले आएं उन से कहा जाता है कि) **तुम को इस का क्या पता** (बल्कि हम को पता है) **कि वो** (मांगी हुई) **निशानी जिस वक़्त** (सामने) **आजाए ये लोग** (हटधर्मी से) **जब भी ईमान न लाएंगे**(109) **और** (उन के ईमान न लाने की वजह से) **हम भी उन के दिलों को** (सच्चाई चाहने के इरादे से) **और उन की निगाहों को** (सच्चाई देखने की नज़र से) **फेर देंगे** (और उन का यह ईमान न लाना ऐसा है) **जैसा ये लोग इस** (क़ुरआन) **पर** (कि बहुत बड़ा मोजिज़ा है) **पहली बार** (जबकि वो आया) **ईमान नहीं लाए** (तो अब ईमान न लाना अचम्भे की बात नहीं) **हम भी उन को उन की सरकशी** (व कुफ़्र) **में भटकता रहने देंगे** (ईमान की तौफ़ीक़ न होगी)(110)।

**नोटः-** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम से कहा कि कोई आदमी अपने मां-बाप को गाली न दे सहाबा ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यह तो कोई इन्सान नहीं कर सकता कि अपने मां बाप को गाली दे आपने कहा कि हां इन्सान ख़ुद तो उन को गाली नहीं देता लेकिन जब वो किसी दूसरे के मां बाप को गाली दे और उस के जवाब में वो दूसरा उस के मां बाप को गाली दे तो उस गाली दिलवाने की वजह यह बेटा बना तो यह भी ऐसा ही है जैसे उस ने ख़ुद गाली दी।

इस लिए बुतों को बुरा कहने से मना कर दिया गया कि फिर लोग नादानी में अल्लाह तआ़ला को बुरा कहेंगे और वजह उस की बुतों को बुरा कहने वाले होंगे। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)